॥ त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि ॥

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर

खम्मा घणी!!

अंक-02

जुलाई - सितम्बर तिमाही 2023

हिंदी माह 2023 समापन समारोह के अवसर पर निदेशक महोदय द्वारा पुरस्कार वितरण

श्री सुदर्शन, कनिष्ठ सहायक

श्री रोबिन सिंह, कनिष्ठ अधीक्षक

श्री योगेश भाटी, अधीक्षक

श्रीमती मनीषा भाटी, कनिष्ठ सहायक

श्री तरूण भाटी, सॉफ्टवेयर इंजीनियर

सुश्री शिल्पा डांडवनी, कनिष्ठ तकनीकी सहायक

सुश्री तन्वी शर्मा, कनिष्ठ सहायक

सुश्री दीप्ति, कनिष्ठ सहायक

श्री ईश्वर सिंह, आउटसोर्स कर्मचारी

श्रीमती मालती टी, सहायक कुलसचिव

संस्थान के स्थापना दिवस के अवसर पर निदेशक का संदेश

प्रिय साथियों,

हम सभी जानते हैं कि 02 अगस्त 2023 को हमारे संस्थान ने 15 वर्षों की गौरवशाली यात्रा पूर्ण की है। पिछले 15 वर्षों के दौरान संस्थान ने शिक्षा, अनुसंधान, नवाचार, बुनियादी ढांचे, औद्योगिक सहयोग, अंतर्राष्ट्रीय संबंध, सामाजिक आउटरीच आदि सहित कई क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रगति देखी है। वर्ष 2017 में स्थायी परिसर में शिफ्ट होने के बाद, संस्थान में अभूतपूर्व विकास हुआ है। हमने छात्रों की संख्या 1000 से बढ़कर 4500 के आंकड़े को पार करते हुए देखी है, संकाय सदस्यों की संख्या 50 से बढ़कर लगभग 250 हो गई है और अन्य कर्मचारियों की संख्या में भी इसी तरह की वृद्धि हुई है।

वर्तमान में भा.प्रौ.सं. जोधपुर शिक्षा, अनुसंधान एवं विकास और उद्योग के सहयोग से कई बहु-संस्थागत और बहु-विषयक परियोजनाओं पर काम कर रहा है, जिससे आत्मनिर्भरता के राष्ट्रीय मिशन में महत्वपूर्ण योगदान मिल रहा है। संस्थान में राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 के अनुसार इंजीनियरिंग शिक्षा में भारतीय भाषाओं को शामिल करने के महत्व पर भी जोर दिया जा रहा है, जिसके फलस्वरूप हम प्रथम वर्ष के ट्यूटोरियल हिंदी में आयोजित कर रहे हैं।

पिछले 15 वर्षों के निरंतर प्रयासों से भा.प्रौ.सं. जोधपुर नवाचार एवं युवा मन में रचनात्मकता पैदा करने और विभिन्न क्षेत्रों में अत्याधुनिक अनुसंधान को बढ़ावा देने का एक प्रमुख केंद्र बन गया है। ऐसी असाधारण प्रगति केवल कड़ी मेहनत और सामूहिक प्रयासों से ही संभव हो पाई है।

02 अगस्त 2023 के दिन मनाया जाने वाला संस्थान का स्थापना दिवस हम सभी के लिए सफलता पर खुशी मनाने और इसे वैश्विक स्तर के सर्वश्रेष्ठ शिक्षण केंद्रों में से एक बनाने के लिए खुद को फिर से समर्पित करने का एक विशेष अवसर है।

प्रो. शांतनु चौधुरी
निदेशक, भा. प्रौ. सं. जोधपुर

मुख्य संरक्षक

प्रो. शांतनु चौधुरी
निदेशक / अध्यक्ष,
राजभाषा कार्यान्वयन समिति

संरक्षक

प्रो. संपत राज वडेरा
उप निदेशक / उपाध्यक्ष,
राजभाषा कार्यान्वयन समिति

प्रकाशन मंडल

डॉ. सोमनाथ घोष
कुलसचिव, अध्यक्ष

प्रो. राम प्रकाश
भौतिकी विभाग, सदस्य

डॉ. क्षेमा प्रकाश
उप पुस्तकालयाध्यक्ष, सदस्य

श्री नीरज कुमार
कनिष्ठ अधीक्षक, सदस्य

डॉ.नितिन भाटिया
हिंदी अधिकारी, सदस्य सचिव

संपादकीय

प्रिय पाठकगण,

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर की हिंदी त्रैमासिक पत्रिका खम्मा घणी का नवीनतम अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। पत्रिका के इस अंक के माध्यम से आपको संस्थान की विभिन्न गतिविधियों से परिचित कराते हुए अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। सर्वप्रथम, मैं पत्रिका के इस अंक में रचनाएँ भेजने वाले सभी लेखकों का आभार व्यक्त करता हूँ आप सभी के सहयोग से हमने इस पत्रिका को रचनात्मक बनाने का प्रयास किया है।

इस वर्ष के प्रारंभ से ही संस्थान में राजभाषा संबंधित विभिन्न उल्लेखनीय कार्यों के क्रियान्वयन की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं तथा इसके प्रयोग में ऐतिहासिक वृद्धि भी हुई है। हिन्दी प्रतियोगिताओं एवं कार्यक्रमों का आयोजन कर सम्पूर्ण सितम्बर माह को संस्थान में "हिन्दी माह-2023" के रूप में मनाया गया।

भारत एक भाषायी विविधताओं वाला राष्ट्र है जहाँ सभी भाषाएँ बहुत समृद्ध एवं प्राचीन है। किसी भी भाषा का विकास और प्रसार तभी तेजी से हो सकता है जब भाषा के मूल और सरल स्वरूप को अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया जाए। इसके अलावा विभिन्न सहभाषाओं के प्रचलित शब्दों को निःसंकोच अपनाकर उस भाषा की स्वीकार्यता को भी बढ़ाया जा सकता है। हिंदी भाषा उपरोक्त सभी गुणों से परिपूर्ण है।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विषयों में हिंदी के विकास की असीम संभावनाओं को नकारा नहीं जा सकता। इसी कड़ी में हम तकनीकी विषयों के लेखन, वाचन एवं शिक्षण में हिंदी को अपनाकर संस्थान में हिंदी के प्रयोग में उल्लेखनीय योगदान दे सकते हैं। हिंदी भाषा को ज्ञान के संचार का एक सशक्त माध्यम बनाने के संकल्प के साथ खम्मा घणी का नया अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है।

डॉ. नितिन भाटिया
हिंदी अधिकारी

नोट: इस पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं, प्रकाशन मंडल का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संपर्क सूत्र – office_hindi@iitj.ac.in **दूरभाष -** +91 291 2801199

संकलन एवं अनुवाद - अशोक गहलोत, कनिष्ठ अधीक्षक एवं सुरेश कुमार, कनिष्ठ सहायक

संकेतक

क्र. सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
1.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति के कार्यान्वयन पर कार्यशाला	06
2.	सामाजिक आउटरीच कार्यक्रम	08
3.	संस्थान स्थापना दिवस	10
4.	आईआईटीजे कनेक्ट @ बैंगलोर	13
5.	जी-20 मुख्य विज्ञान सलाहकार गोलमेज सम्मेलन	14
6.	सभी के कल्याण के लिए एक स्वास्थ्य कार्यक्रम	16
7.	बायोडिजाइन बूटकैंप	17
8.	अध्यक्ष अभिशासक मंडल के विदाई समारोह कार्यक्रम की झलकियाँ	19
9.	स्वतंत्रता दिवस समारोह के अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियाँ	20
10.	इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) एवं अनुप्रयोग कार्यशाला	23
11.	हिंदी माह-2023	25
12.	टर्म इंश्योरेंस पर कार्यशाला की झलकियाँ	26
13.	भारतीय अंगदान दिवस	27
14.	शिक्षक दिवस कार्यक्रम की झलकियाँ	28
15.	राष्ट्रीय एमएसएमई (MSME) सम्मेलन	29
16.	विभागीय तकनीकी वार्ताएं एवं चर्चा सत्र	31
17.	**आलेख:** “चंद्रयान-3 प्रक्षेपण: वैज्ञानिक सीख एवं संभावनाएँ” - प्रो. श्रीप्रकाश तिवारी	32
18.	**आलेख:** “मेरा भारत - मेरी आजादी” - डॉ. विवेक विजय	35
19	क्राउडसोर्स्ड पक्षी डेटा : एक महत्वपूर्ण उपकरण	38
20	स्थापना दिवस पर वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियाँ	39

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के कार्यान्वयन पर कार्यशाला

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के लागू होने के 3 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में एमबीएम विश्वविद्यालय जोधपुर, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर, लाचू मेमोरियल कॉलेज ऑफ़ साइंस एंड टेक्नोलॉजी जोधपुर जैसे प्रतिष्ठित उच्च शिक्षा संस्थानों; केन्द्रीय विद्यालय, बोधि इंटरनेशनल स्कूल, मयूर चौपासनी स्कूल एवं राजमाता स्कूल जैसे जोधपुर के प्रसिद्ध विद्यालयों सहित विभिन्न प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थानों का प्रतिनिधित्व करने वाले 25 से अधिक प्रमुख संस्थाओं के प्रमुखों ने सक्रिय भागीदारी की। कार्यशाला के कार्यक्रमानुसार एक पैनल चर्चा हुई, जिसमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP-2020) के दूरदर्शी लक्ष्यों के साथ सही तालमेल से सीखने और सिखाने के लिए एकीकृत दृष्टिकोण पर जोर दिया गया। सहयोगात्मक और दूरदर्शी चर्चाओं ने शिक्षा में उत्कृष्टता को बढ़ावा देने, राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सिद्धांतों को लागू करने और देश भर में शिक्षार्थियों के एक उज्ज्वल भविष्य को आकार देने का मार्ग प्रशस्त किया।

विभिन्न संस्थानों के प्रतिनिधियों के साथ चर्चा के दौरान निदेशक प्रोफ़ेसर शांतनु चौधुरी

देश में शिक्षा के स्तर को बढ़ाने के लिए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर शिक्षकों और शिक्षार्थियों की अगली पीढ़ी को सशक्त बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। संस्थान ने पाठ्यक्रमों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 की सिफारिशों के क्रियान्वयन के लिए उचित उपाय अपनाने में सक्रियता दिखाई है। राष्ट्रीय महत्व के संस्थान के रूप में भा.प्रौ.सं. जोधपुर देश की शैक्षिक नीतियों को समय पर लागू करने के लिए अपनी भूमिका से पूरी तरह परिचित है। संस्थान अपने मौजूदा कार्यक्रमों की संरचना और प्रकृति को सावधानीपूर्वक संपादित कर रहा है, जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 निर्देशों को लागू करने के लिए एक मजबूत आधार प्रदान कर सकता है।

कार्यशाला के उद्घाटन सत्र के दौरान संस्थान के निदेशक प्रोफ़ेसर शांतनु चौधुरी ने छात्रों को अपनी पसंद का पाठ्यक्रम चुनने का विकल्प देने एवं शैक्षणिक पाठ्यक्रमों में सुधार के लिए विभिन्न पहलों पर चर्चा की। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 को संस्थान की शैक्षणिक और अनुसंधान गतिविधियों के अनुरूप लाने के लिए संस्थान में विभिन्न स्कूलों, केंद्रों एवं अंतःविषय अनुसंधान प्लेटफार्मों जैसी कुछ नई अंतःविषय और अंतर-विषयक इकाइयाँ भी शुरू की गई हैं।

भा.प्रौ.सं. जोधपुर पहले से ही छात्रों को सत्रों के मध्य विषय बदलने और उपयुक्त निकास के विकल्पों (Exit option) की पेशकश कर रहा है। छात्रों के लिए भौतिकी में बी.एस. (विशेषज्ञता के साथ) और रसायन विज्ञान में बी.एस. (विशेषज्ञता के साथ) जैसे विभिन्न बहु-विषयक प्रकृति के पाठ्यक्रम भी पेश किए जा रहे हैं जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 की कल्पना के अनुरूप ही हैं। ये विशिष्ट मिश्रित कार्यक्रम राष्ट्रीय शिक्षा नीति और भा.प्रौ.सं. जोधपुर के समग्र छात्र विकास के दृष्टिकोण पर आधारित हैं, जो संस्थान को विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एक अग्रणी शक्ति के रूप में स्थापित करता है।

परिणामोन्मुख (Result oriented) शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करने और उभरती तकनीकी चुनौतियों का सामना करने के लिए भी पाठ्यक्रमों को संशोधित किया गया है। बी.टेक. डिग्री में अतिरिक्त क्रेडिट हासिल करने के सह-विकल्प (Add on) के साथ लघु या वृहद (Minor or Major) विशेषज्ञता वाले कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार हुई है। संस्थान ने शैक्षिक रूप से कमजोर छात्रों के लिए भी विशेष ट्यूटोरियल की पेशकश करके स्नातक शिक्षण सहायक योजना प्रारंभ की है।

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स जोधपुर) के साथ संचालित संयुक्त शैक्षणिक कार्यक्रम के अंतर्गत बी.टेक. की डिग्री हासिल करने वाले छात्रों के लिए विविध प्रकार के विकल्प उपलब्ध करवाए गए है। छात्रों के पास 100 क्रेडिट पूरा करने के बाद निकास के विकल्प (Exit option) के साथ इंजीनियरिंग साइंस में पारंपरिक बी.एससी. चुनने का विकल्प होता है। वैकल्पिक रूप से वे अपनी रुचि और लक्ष्यों के अनुरूप व्यक्तिगत पाठ्यक्रम के साथ इंजीनियरिंग विज्ञान में भी बी.टेक. कर सकते हैं। ***यह अनूठा कार्यक्रम इंजीनियरिंग शिक्षा में भारतीय भाषाओं को शामिल करने के महत्व पर भी जोर देता है, जिसमें प्रथम वर्ष के ट्यूटोरियल हिंदी में आयोजित किए जाते हैं।*** इसके अलावा, पीएच.डी. और एम.टेक. कार्यक्रमों के लिए कई प्रवेश-निकास बिंदुओं के बीच बदलाव की व्यवस्था उपलब्ध है, जिससे छात्रों को विभिन्न शैक्षणिक संभावनाओं और उपलब्धियों की ओर अग्रसर होने का सरल एवं उचित विकल्प मिलता है।

संस्थान ने उद्योग और समाज की उभरती मांगों को पूरा करने के लिए भी विभिन्न नए कार्यक्रमों की पेशकश की हैं। इनमें डिजिटल मानविकी में एम.एससी., रोबोटिक्स और मोबिलिटी में एम.टेक. और क्वांटम टेक्नोलॉजी, स्मार्ट हेल्थ, इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT), अंतरिक्ष विज्ञान और इंजीनियरिंग जैसे अत्याधुनिक क्षेत्रों में पीएच.डी. कार्यक्रम शामिल हैं। अंतःविषयता को बढ़ावा देने के लिए मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग को स्कूल ऑफ लिबरल आर्ट्स (SoLA) में उन्नयन किया गया है, जो मिश्रित-मीडिया रूपों पर ध्यान देने के साथ कम्प्यूटेशनल सोशल साइंस में एम.एससी. और एआई एवं क्रिएटिव आर्ट्स में एम.एस. (अनुसंधान) जैसे कार्यक्रमों की पेशकश करता है। इसके अलावा, आयुर्वेद और इंजीनियरिंग के एकीकरण के फलस्वरूप आयुष मंत्रालय द्वारा समर्थित आयुर्टेक अनुसंधान केंद्र की स्थापना की गई है।

संस्थान ने छात्रों के बीच नवाचार और उद्यमिता विकसित करने के लिए एक सक्रिय दृष्टिकोण अपनाया है। यह व्यापक और दूरदर्शी शैक्षणिक ढांचा छात्रों को तेजी से विकसित हो रही दुनिया में उत्कृष्टता हासिल करने और समाज में सार्थक योगदान देने के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान से परिपूर्ण करता है।

शिक्षा क्षेत्र में प्रौद्योगिकी की भूमिका को स्वीकार करते हुए संस्थान के उप निदेशक प्रोफ़ेसर संपत राज वडेरा ने "सेंटर फॉर एज्युकेशन एंड टेक्नोलॉजी फॉर एज्युकेशन - सीईटीई" के बारे में बात की, जो शैक्षणिक और तकनीकी नवाचारों के माध्यम से शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए काम कर रहा है। प्रारंभ से ही, भा.प्रौ.सं. जोधपुर में सीईटीई की परिकल्पना अन्य क्षेत्रीय उच्च प्रभाव वाले शैक्षिक संसाधनों को विकसित करके शिक्षण की चुनौतियों का समाधान करने के लिए की गई। यह केंद्र पारंपरिक शिक्षण तंत्र को दिलचस्प शिक्षण प्रतिमान में बदलने के लिए सक्रिय रूप से काम कर रहा है। कार्यशाला और पैनल चर्चा में भाग लेने वाले विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों के प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला समाप्त हुई।

सामाजिक आउटरीच कार्यक्रम

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर द्वारा सामाजिक आउटरीच कार्यक्रम 1 अगस्त 2023 को आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि हिमालयन पर्यावरण अध्ययन और संरक्षण संगठन (हेस्को) के संस्थापक डॉ. अनिल जोशी (पद्म भूषण, पद्म श्री से सम्मानित) उपस्थित थे। संस्थान के निदेशक प्रोफ़ेसर शांतनु चौधुरी ने कहा, "भा.प्रौ.सं. जोधपुर अपने संस्थान समुदाय से परे वृहत समाज तक पहुंचने का प्रयास करते हुए प्रौद्योगिकी एवं नवाचार के माध्यम से समाज की गंभीर समस्याओं का समाधान करने के लिए विभिन्न हितधारकों के साथ सहयोग कर रहा है। भा.प्रौ.सं. जोधपुर ने सामाजिक पहुंच जैसे चिकित्सा प्रौद्योगिकी, जल शुद्धिकरण, थार पारिस्थितिकी तंत्र, वायु प्रदूषण और राज्य के हस्तशिल्प कारीगरों का समर्थन करने हेतु डिजिटल हस्तक्षेप के निर्माण में अभूतपूर्व काम किया है। जोधपुर सिटी नॉलेज एंड इनोवेशन फाउंडेशन (JCKIF) के साथ हम सामाजिक जरूरतों को पूरा करने के लिए प्रयासरत हैं।"

मुख्य अतिथि डॉ. अनिल जोशी (दाएं) को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए निदेशक शांतनु चौधुरी

इस कार्यक्रम में सामाजिक पहुंच के लिए विभिन्न संस्थाओं के सहयोग से भा.प्रौ.सं. जोधपुर द्वारा की गई विभिन्न गतिविधियों को प्रदर्शित किया गया-

शिल्प गतिविधियाँ:

भा. प्रौ. सं. जोधपुर और जोधपुर सिटी नॉलेज इनोवेशन फाउंडेशन (JCKIF) के दूरदर्शी समर्थन के साथ प्रौद्योगिकीविदों और कुशल कारीगरों के सहयोग से उभरा एक अभूतपूर्व 3डी क्राफ्टवर्स - "कलाअनुभव" है। यह नवोन्मेषी मंच भारतीय हस्तशिल्प की मनोरम दुनिया के माध्यम से एक व्यापक और व्यक्तिगत यात्रा की पेशकश करने के लिए परंपरा और प्रौद्योगिकी को सहजता से जोड़ता है।

पेयजल गतिविधियाँ:

ग्रामीण और दूरदराज के स्कूलों में स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने और विभिन्न हितधारकों के लिए क्षमता-निर्माण, आउटरीच, अनुसंधान और शिक्षा को मजबूत करने के लिए जल जीवन मिशन के साथ मिलकर काम करता है। नवाचार और विशेषज्ञता का एक प्रमाण भा.प्रौ.सं. जोधपुर परिसर में एक स्मार्ट ग्रेडेड वाटर सप्लाई ग्रिड का विकास है, जो एक मॉडल परीक्षण स्थल के रूप में कार्य करता है। यह परियोजना जल आपूर्ति प्रौद्योगिकियों को आगे बढ़ाने की दिशा में संस्थान की प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

इंडोर प्रदूषण रोकथाम गतिविधियाँ:

आईसीएमआर-एनआईआईआरडीसी के सहयोग से, विभिन्न सूक्ष्म वातावरणों में इंडोर और परिवेश वायु गुणवत्ता का आकलन करने के लिए जोधपुर में एक व्यापक अध्ययन किया गया है। विभिन्न इंडोर सूक्ष्म वातावरणों की जांच करने और एयरोसोल के भौतिक गुणों पर विभिन्न स्रोतों, गतिविधियों, अधिभोग स्तरों और वेंटिलेशन सिस्टम के प्रभाव को समझने के लिए, जोधपुर सिटी नॉलेज इनोवेशन फाउंडेशन (JCKIF) के साथ साझेदारी में, कोटा और भा.प्रौ.सं. जोधपुर परिसरों में अन्य अध्ययन आयोजित किए गए थे। सार्वजनिक स्वास्थ्य के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के हिस्से के रूप में, भा.प्रौ.सं. जोधपुर ने नवीन कोल्ड प्लाज्मा तकनीक-आधारित नोवेल कोड एयर स्टेरलाइज़र विकसित किया है, जो एक पेटेंटेड तकनीक है जिसका उद्देश्य इनडोर सेटिंग्स में वायुजनित रोगजनक संक्रमण के जोखिम को कम करना है। अत्याधुनिक एयर स्टरलाइज़र का वर्तमान में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स जोधपुर) में मरीजों पर परीक्षण किया जा रहा है, जो इनडोर वायु प्रदूषण और संबंधित स्वास्थ्य जोखिमों के खिलाफ लड़ाई में एक महत्वपूर्ण कदम है।

सामाजिक आउटरीच कार्यक्रम में विभिन्न गतिविधियों पर वार्ता करते विशेषज्ञ संकाय सदस्य

थार डिज़ाइन गतिविधियाँ:

"थार डिज़ाइन" प्रकृति के मार्गदर्शन और चयन से प्रेरणा लेते हुए, डेजर्ट इकोसिस्टम की नवीन भावना को पकड़ने के अपने मिशन को अपनाता है। वन हेल्थ के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के हिस्से के रूप में, संगठन ने विभिन्न पायलट परियोजनाओं की शुरुआत की है, जिसमें इकोसिस्टम फिनोमिक्स, बायोप्रोस्पेक्टिंग, बायोइंस्पिरेशन और सिटीजन साइंस आदि शामिल हैं। "प्रकृति ऐप" को काम लेने वाले नागरिकों से पारिस्थितिक डेटा इकट्ठा करने, स्थायी पर्यावरण संरक्षण की दिशा में सामूहिक प्रयासों को बढ़ाने और रेगिस्तान पारिस्थितिकी तंत्र की जटिल गतिशीलता को समझने के लिए एक मूल्यवान उपकरण के रूप में पेश किया गया है।

मेडटेक गतिविधियाँ:

भा.प्रौ.सं. जोधपुर और अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स जोधपुर) के बीच एक सहयोगात्मक प्रयास मेडिकल टेक्नोलॉजीज कार्यक्रम है जो संकाय, उद्यमियों और उद्योग के नेताओं की एक टीम द्वारा सह-परामर्श के लिए डॉक्टरों और इंजीनियरों को एक साथ लाता है। आत्मनिर्भर भारत, डिजिटल स्वास्थ्य मिशन और मेक इन इंडिया की भावना को अपनाते हुए, यह कार्यक्रम चिकित्सा प्रौद्योगिकी विकास में तेजी लाने, क्षेत्र में आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिए समर्पित है।

भा.प्रौ.सं. जोधपुर में, आउटरीच और जुड़ाव की संस्कृति को बढ़ावा देना अत्यंत महत्वपूर्ण है। हम अपने नियमित ओपन हाउस कार्यक्रमों के दौरान उत्साही स्कूल के छात्रों, कॉलेज के छात्रों और समान रूप से उत्सुक वयस्कों का हार्दिक स्वागत करते हैं, जहां वे प्रौद्योगिकी और नवाचारों को प्रत्यक्ष रूप से देख सकते हैं।

संस्थान स्थापना दिवस

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर में 1-2 अगस्त 2023 को 16 वां स्थापना दिवस मनाया गया, जिसमें इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के सचिव श्री अलकेश कुमार शर्मा मुख्य अतिथि थे। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. आर.चिदंबरम, अध्यक्ष बोर्ड ऑफ़ गवर्नर्स, भा.प्रौ.सं. जोधपुर ने की। प्रोफ़ेसर शांतनु चौधुरी, निदेशक, भा.प्रौ.सं. जोधपुर ने समारोह में स्वागत भाषण दिया। श्री अलकेश कुमार शर्मा ने छात्र नवाचार प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए, उभरती प्रौद्योगिकियों के नेतृत्व वाले समावेशी विकास के प्रति संस्थान के दृष्टिकोण की सराहना की। श्री शर्मा ने "आत्मनिर्भर भारत" के लक्ष्यों की दिशा में प्रौद्योगिकी क्रांति लाने के लिए भा.प्रौ.सं. जोधपुर द्वारा अपनी क्षमताओं का विस्तार करने एवं विभिन्न सरकारी योजनाओं को लागू करने में किए गए प्रयासों की सराहना की।

प्रो. संपत राज वडेरा, श्री अलकेश कुमार शर्मा, प्रो. शांतनु चौधुरी द्वारा संस्थान की पुस्तिका का विमोचन करते हुए

डॉ. चिदम्बरम ने भी संस्थान में होने वाली अनुसंधान गतिविधियों की सराहना की, जिसका उद्देश्य देश के युवाओं के बीच नवीन सोच का संचार करते हुए विभिन्न समस्याओं के समाधान की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना है। इस अवसर पर भा.प्रौ.सं. जोधपुर ने अपने ग्यारह संकाय सदस्यों और तीन स्टाफ सदस्यों को उनके करियर पथ के सभी स्तरों पर उत्कृष्ट योगदान को मान्यता देने के लिए सम्मानित किया।

अनुसंधान उत्कृष्टता पुरस्कार:

संस्थान 2020 से प्रत्येक वर्ष संस्थान स्थापना दिवस के अवसर पर संकाय सदस्यों को उनके उत्कृष्ट अनुसंधान योगदान के लिए पुरस्कृत कर रहा है। 2020 से, कुल 14 संकाय सदस्यों को उत्कृष्ट अनुसंधान पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। विज्ञान, इंजीनियरिंग और मानविकी, सामाजिक विज्ञान एवं प्रबंधन के क्षेत्र में युवा शोधकर्ता पुरस्कार और वरिष्ठ शोधकर्ता पुरस्कार की श्रेणियां हैं। उपरोक्त श्रेणी के लिए इस वर्ष के पुरस्कार हैं:

डॉ. मनीष नरवरिया, सह आचार्य, इंजीनियरिंग श्रेणी, यंग फैकल्टी
डॉ. शहाब अहमद, सह आचार्य, विज्ञान श्रेणी, यंग फैकल्टी
डॉ. अनुज पाल कपूर, सहायक आचार्य, सामाजिक विज्ञान एवं प्रबंधन श्रेणी, यंग फैकल्टी

अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान गतिशीलता अनुदान (IRMG):

वर्ष 2021 में, संस्थान ने भा.प्रौ.सं. जोधपुर और अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठित संस्थानों (शीर्ष क्यूएस रैंकिंग) के बीच अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान और सहयोग के लिए इंटरनेशनल रिसर्च मोबिलिटी ग्रांट (IRMG) लॉन्च किया। 10 लाख रुपये तक की वित्तीय सहायता के साथ परियोजनाओं के चयन के लिए दो-चरणीय सहकर्मी समीक्षा प्रक्रिया का पालन करने के पश्चात युवा संकाय सदस्यों को अवसर प्रदान करने के लिए अनुसंधान और विकास कोष से अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान गतिशीलता अनुदान का समर्थन किया जाता है। इस श्रेणी के लिए इस वर्ष के पुरस्कार हैं:

- डॉ. सुखेंदु घोष, सह आचार्य, गणित विभाग
- डॉ. रंजू मोहन, सहायक आचार्य, सिविल एवं अवसरंचना अभियांत्रिकी विभाग
- डॉ. सुमन ढाका, सहायक आचार्य, स्कूल ऑफ लिबरल आर्ट्स
- डॉ. सुचेतना चक्रवर्ती, सह आचार्य, कंप्यूटर विज्ञान और अभियांत्रिकी विभाग
- डॉ. मिठू रानी कुइती, सहायक आचार्य, स्कूल ऑफ मैनेजमेंट एंड एंटरप्रेन्योरशिप

कार्यक्रम के दौरान ऑनलाइन भाग लेते डॉ. आर. चिदम्बरम (अध्यक्ष बीओजी) एवं मंचासीन श्री अलकेश कुमार शर्मा

शिक्षण में नवाचार के लिए वंदना मेमोरियल पुरस्कार:

भा.प्रौ.सं. जोधपुर में स्वर्गीय डॉ. वंदना शर्मा (गणित विभाग) के महत्वपूर्ण योगदान के स्मरण में 'शिक्षण नवाचार के लिए डॉ. वंदना शर्मा मेमोरियल अवार्ड' की स्थापना की है। इस पुरस्कार के विजेता है:

- डॉ. जितेश मोहनोत, सहायक आचार्य, स्कूल ऑफ मैनेजमेंट एंड एंटरप्रेन्योरशिप
- डॉ. साक्षी धानेकर, सह आचार्य, विद्युत अभियांत्रिकी

प्रतिभाशाली कर्मचारी पुरस्कार:

भा.प्रौ.सं. जोधपुर के स्टाफ सदस्यों द्वारा किए गए महत्वपूर्ण योगदान को मान्यता देते हुए उन स्टाफ सदस्यों को संबंधित विभागों में अनुकरणीय और उल्लेखनीय योगदान के लिए पुरस्कृत किया है। इस वर्ष के विजेता हैं:

- ग्रुप ए : श्री प्रशांत भारद्वाज, सहायक कुलसचिव
- ग्रुप बी: श्री अशोक गहलोत, कनिष्ठ अधीक्षक
- ग्रुप सी: श्री श्याम सुंदर सिंह, कनिष्ठ सहायक

भा.प्रौ.सं. जोधपुर में वैज्ञानिक उत्कृष्टता सत्र

स्थापना दिवस कार्यक्रम के दूसरे चरण में "वैज्ञानिक उत्कृष्टता" विषय पर एक सत्र का आयोजन किया गया। सत्र के मुख्य अतिथि एयरोनॉटिकल डेवलपमेंट एजेंसी, बैंगलोर के निदेशक डॉ. जितेंद्र जे. जाधव थे। स्थापना दिवस भाषण भा.प्रौ.सं. पटना के पूर्व निदेशक प्रोफ़ेसर पुष्पक भट्टाचार्य ने दिया। इस सत्र की अध्यक्षता भा.प्रौ.सं. जोधपुर के निदेशक प्रोफ़ेसर शांतनु चौधुरी ने की। भा.प्रौ.सं. जोधपुर के संकाय सदस्यों द्वारा पंद्रह उच्च उद्धृत और सर्वश्रेष्ठ शोध प्रस्तुतियाँ की गईं। साथ ही, सर्वश्रेष्ठ फोन फोटोग्राफी प्रतियोगिता के लिए छात्रों, कर्मचारियों और संकाय सदस्यों को पंद्रह पुरस्कार दिए गए, जिसमें परिसर की सुंदरता को प्रदर्शित करने वाली 140 से अधिक प्रविष्टियाँ प्राप्त हुई।

वैज्ञानिक उत्कृष्टता सत्र में (बाएं से दाएं) – डॉ. एस. सी. बोस, प्रो. पुष्पक भट्टाचार्य, डॉ. जितेंद्र जे. जाधव, प्रो. शांतनु चौधुरी और प्रो. सुरजीत घोष

भा.प्रौ.सं. जोधपुर ने नवीन एवं प्रगतिशील विचारों पर 'मूनशॉट प्रोजेक्ट्स' को आगे बढ़ाने के लिए अनूठा मंच प्रदान किया है। "मूनशॉट प्रतियोगिता" का विचार उन परियोजनाओं को विकसित करना है जो स्वास्थ्य, सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय मुद्दों पर भविष्य में बड़े पैमाने पर समाधान प्रदान कर सकती हैं। इसके माध्यम से, भा.प्रौ.सं.जोधपुर तात्कालिक समस्याओं के समाधान और स्थायी भविष्य का मार्ग प्रशस्त करने के साथ-साथ रचनात्मकता और टीम-निर्माण को बढ़ावा देने के लिए नई अनुसंधान पहल को प्रोत्साहित करने की इच्छा रखता है। इस वर्ष, मूनशॉट पुरस्कार सिविल और इंफ्रास्ट्रक्चर इंजीनियरिंग विभाग के सहायक आचार्य डॉ. देबंजन गुहा रॉय को उनके नवीन शोध विचार "लूनर टनल बोरिंग मशीन फॉर अंडरग्राउंड मून हैबिटेट" के लिए दिया गया है।

डॉ. देबंजन गुहा रॉय, मूनशॉट पुरस्कार प्राप्त करते हुए

समारोह के समापन में एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें भा.प्रौ.सं. जोधपुर के संकाय सदस्यों, कर्मचारियों और छात्रों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। भा.प्रौ.सं. जोधपुर परिसर में विविधता दिखाते हुए नृत्य और गायन की प्रस्तुतियाँ दी गईं। स्थापना दिवस उत्सव के समापन के साथ संस्थान ने शिक्षा और अनुसंधान की दुनिया पर एक अमिट छाप छोड़ते हुए वैज्ञानिक खोज, शैक्षणिक प्रतिभा और सामाजिक परिवर्तन के पथ पर आगे बढ़ने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराई।

आईआईटीजे कनेक्ट @ बैंगलोर

09 सितंबर 2023 को बैंगलोर में प्रोफ़ेसर शांतनु चौधुरी, निदेशक, भा. प्रौ. सं. जोधपुर ने डीन और संकाय सदस्यों के एक प्रतिनिधिमंडल के साथ एक एलुमनी कनेक्ट सत्र कार्यक्रम की मेजबानी की। एलुमनी कनेक्ट इवेंट के मौके पर उद्योग-कनेक्ट सत्र की भी योजना थी। भा.प्रौ.सं. जोधपुर कनेक्ट सत्र के दौरान संस्थान के निदेशक प्रोफ़ेसर शांतनु चौधुरी ने स्टार्टअप के लिए इनक्यूबेशन स्पेस का उद्घाटन किया, जिसमें उद्योग-अकादमिक भागीदारी, उद्यमशीलता की भावना और ज्ञान के आदान-प्रदान को बढ़ावा देने के लिए भा.प्रौ.सं. जोधपुर की प्रतिबद्धता को दर्शाया गया। सत्र द्वारा पूर्व छात्रों, उद्योग जगत की हस्तियों और शिक्षा जगत को संयुक्त अनुसंधान प्रयासों का पता लगाने, छात्र-संकाय-उद्योग के बीच संबंधों को बढ़ाने और नवाचार और विकास के समृद्ध भविष्य के लिए आधार तैयार करने के लिए एक गतिशील मंच प्रदान किया गया।

इनक्यूबेशन स्पेस का उद्घाटन करते निदेशक महोदय एवं अन्य अधिकारी

इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य संयुक्त अनुसंधान परियोजनाओं, छात्रों और संकाय सदस्यों को उद्योगों के साथ जोड़ने जैसे विभिन्न पहलुओं पर उद्योगों और पूर्व छात्रों के साथ निकटता से जुड़ने के लिए एक मंच प्रदान करना है। इस आयोजन ने उद्योगों के सामने आने वाली तकनीकी चुनौतियों पर चर्चा करने के लिए एक मंच प्रदान किया। इस सत्र से चुनौतियों से निपटने के लिए उद्योगों के साथ दीर्घकालिक संबंधों की शुरुआत हुई। भा.प्रौ.सं. जोधपुर पूर्व छात्र संघ के बैंगलोर चैप्टर की घोषणा 26 नवंबर 2020 को बैंगलोर में आयोजित पिछले एलुमनी कनेक्ट सत्र में की गई थी और बैंगलोर स्थित भा.प्रौ.सं. जोधपुर में पूर्व छात्रों के साथ नियमित जुड़ाव से यह एक सक्रिय समूह बन गया है।

इनक्यूबेशन स्पेस बैंगलोर में एलुमनी कनेक्ट आयोजन का समूह फोटो

जी-20 मुख्य विज्ञान सलाहकार गोलमेज सम्मेलन

विज्ञान और प्रौद्योगिकी में विविधता, समानता, समावेशन और पहुंच पर जी-20 मुख्य विज्ञान सलाहकार गोलमेज सम्मेलन (जी-20 सीएसएआर) कार्यक्रम, जिसमें विज्ञान और प्रौद्योगिकी संचालित वैश्विक कार्रवाई के लिए योजना और नीति पर ध्यान केंद्रित किया गया। यह कार्यक्रम 19 अगस्त 2023 को जोधपुर सिटी नॉलेज इनोवेशन फाउंडेशन (JCKIF) द्वारा आयोजित किया गया था। इसके अंतर्गत आजीविका, सामाजिक समावेशन, विविधता और समानता पर अखिल भारतीय कार्यक्रम के विशेषज्ञ उत्तरप्रदेश, केरल, दिल्ली, आंध्र प्रदेश, पंजाब, पश्चिम बंगाल, राजस्थान से भाग लेने पहुंचे और कुछ विदेश से भी ऑनलाइन शामिल हुए।

उद्घाटन समारोह में मंचासीन (बाएं से दाएं) प्रो. जी एस टोटेजा (मुख्य कार्यकारी अधिकारी-JCKIF), निदेशक प्रो. शांतनु चौधुरी एवं उप निदेशक प्रो. संपत राज वडेरा

कार्यक्रम का उद्घाटन भा.प्रौ.सं. जोधपुर के निदेशक प्रोफ़ेसर शांतनु चौधुरी ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में प्रो. चौधुरी ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी में विविधता, समानता, समावेशन और पहुंच के मुद्दों पर विचार करने पर जोर दिया। उन्होंने लैंगिक संवेदनशीलता पर विचार करने, लैंगिक विभाजन को पाटने और विशेष योग्यता वाले लोगों तथा उनकी शिक्षा के साथ-साथ कौशल विकास के बारे में विस्तार से बताया। भा.प्रौ.सं. जोधपुर के उप निदेशक प्रोफ़ेसर संपत राज वडेरा द्वारा दर्शकों को जोधपुर सिटी नॉलेज इनोवेशन फाउंडेशन (JCKIF) के मिशन और विजन से परिचित कराया गया।

दिन का पहला सत्र विविधता, लिंग और सामाजिक समावेशन के बारे में था, जिसे राष्ट्रीय ग्रामीण विकास और पंचायती राज संस्थान, हैदराबाद के वेतन रोजगार और आजीविका केंद्र में सहायक प्रोफ़ेसर डॉ. सोनल मोबार रॉय सहित विशेषज्ञों ने संबोधित किया। क्वेस्ट एलायंस, बैंगलोर में लर्निंग एक्सपीरियंस विशेषज्ञ सुश्री अजा शर्मा ने स्कूलों में शिक्षा कार्यक्रमों के लिए अपने काम के बारे में बात की, जिसमें शिक्षा और एसटीईएम (STEM) में लड़कियों को शामिल करने पर ध्यान केंद्रित किया गया। गैर सरकारी संगठन "**हमारी लाडो**" की संस्थापक सुश्री प्रेमलता पूनिया ने ग्रामीण क्षेत्रों और कम आय वाले परिवारों से आने वाली लड़कियों के विकास पर अपने काम के बारे में बात की। अर्पण सेवा संस्थान के डॉ. वरुण शर्मा ने राजस्थान में अपनी टीम के काम से दो केस-स्टडी साझा की। इंडियन एक्सप्रेस की पत्रकार सुश्री उत्सा सरमिन ने सुंदरबन में जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से लैंगिक भूमिकाओं और सामाजिक पदानुक्रम के असर पर अपना संबोधन दिया। प्रोफ़ेसर आनंद के. प्लाप्पल्ली, प्रमुख, सेंटर फॉर इमर्जिंग टेक्नोलॉजीज फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट (सीईटीएसडी), भा.प्रौ.सं. जोधपुर ने सत्र का संचालन किया।

दिन का दूसरा सत्र आजीविका, क्षेत्रीय विविधता और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के बारे में था जिसे डॉ. ए. राधाकृष्णन, सहायक निदेशक, राष्ट्रीय कॉयर प्रशिक्षण एवं डिजाइन केंद्र, केंद्रीय कॉयर अनुसंधान संस्थान, भारत सरकार (सेवानिवृत्त) सहित विशेषज्ञों ने संबोधित किया। नेचर इंडिया की एसोसिएट एडिटर सुश्री सहाना घोष ने जैव विविधता, जलवायु परिवर्तन, स्वदेशी विज्ञान, पर्यावरणीय स्वास्थ्य और लैंगिक अध्ययन के बारे में बात की।

सम्मेलन में पैनल चर्चा करते निदेशक महोदय एवं अन्य आमंत्रित वक्ता

कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय डेविस से मानव विज्ञान में डॉक्टरेट डॉ. एवलीन कौर सिडाना ने भारत में स्मार्ट शहरों पर अपने काम के बारे में बात की। देव संस्कृति विश्वविद्यालय हरिद्वार के ग्रामीण विकास विभाग के डॉ. धन पाल सिंह ने मधुमक्खी पालन और वर्मी-कम्पोस्ट पर अपने काम और रोजगार के अवसर पैदा करने और ग्रामीण विकास पर इसके प्रभाव के बारे में बात की। प्रिंसटन यूनिवर्सिटी, संयुक्त राज्य अमेरिका के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अजय नागपुरे ने शहरी स्थिरता, वायु गुणवत्ता प्रबंधन और जलवायु परिवर्तन में अपने काम के बारे में बात की। सत्र का संचालन भा.प्रौ.सं. जोधपुर के डॉ. प्रसेनजीत त्रिभुवन ने किया।

कार्यशाला में विभिन्न क्षेत्रों के 20 अनुसंधान संस्थानों का प्रतिनिधित्व करने वाले 33 प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं ने भाग लिया। विचार-विमर्श का उद्देश्य एक ऐसे भविष्य का निर्माण करना था जहां विज्ञान के विकास के लिए स्वास्थ्य और विद्वतापूर्ण वैज्ञानिक ज्ञान तक पहुंच भौगोलिक सीमाओं या आर्थिक बाधाओं से सीमित न हो।

जी-20 सीएसएआर आयोजनों के साथ-साथ, एक ऑनलाइन जनहित आइडियाथॉन भी हुआ, जिसमें छात्रों को समाज के सबसे दूरस्थ व्यक्तियों तक सरकारी नीतियों की कुशल डिलीवरी सुनिश्चित करने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करने की चुनौती सौंपी गई।

हिंदी उन सभी गुणों से अंलकृत है, जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषा की अगली श्रेणी में समासीन हो सकती है।

मैथिलीशरण गुप्त

सभी के कल्याण के लिए एक स्वास्थ्य कार्यक्रम

20 अगस्त, 2023 को जोधपुर सिटी नॉलेज एंड इनोवेशन फाउंडेशन (JCKIF) द्वारा 'सभी के कल्याण के लिए एक स्वास्थ्य' विषय पर G20-मुख्य विज्ञान सलाहकार गोलमेज सम्मेलन (जी-20 सीएसएआर) कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस आयोजन का उद्देश्य सभी के कल्याण के लिए स्वास्थ्य से संबंधित मुद्दों पर चर्चा करने और संबोधित करने के लिए देश भर के प्रमुख विशेषज्ञों, शोधकर्ताओं, नीति निर्धारकों और चिकित्सकों को एक साथ लाना था। जिसमें विषयगत सत्रों में स्वास्थ्य के लिए स्थायी समाधान; मानव स्वास्थ्य; संयंत्र और पर्यावरणीय स्वास्थ्य; स्थिरता के लिए प्रौद्योगिकी; नागरिक विज्ञान और हितधारक परिप्रेक्ष्य पर विचार-विमर्श किया गया।

एक स्वास्थ्य परिप्रेक्ष्य:

एक स्वास्थ्य की अवधारणा मानव कल्याण से परे फैली हुई है, सहयोग और बहु-विषयक तालमेल पर जोर देती है। यह मानव स्वास्थ्य, जूनोटिक रोगों, गैर संचारी रोगों और रोगाणुरोधी प्रतिरोध पर बदलते पर्यावरण के प्रभाव को पहचानता है, जिसके लिए व्यवस्थित सोच और दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। स्वास्थ्य के विभिन्न घटकों की परस्पर संबद्धता श्रेष्ठ स्वास्थ्य परिणामों के लिए स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और वैश्विक भागीदारी की मांग करती है।

जी-20 सीएसएआर के अंतर्गत वन हेल्थ कार्यक्रम में मानव, पशु और पर्यावरणीय स्वास्थ्य के अंतर्संबंध के संदर्भ में सहयोग, बहु-विषयक दृष्टिकोण और टिकाऊ समाधान के महत्व पर ध्यान केंद्रित किया गया।

G20-मुख्य विज्ञान सलाहकार गोलमेज सम्मेलन के वक्ताओं के साथ निदेशक महोदय

"जिस देश को अपनी भाषा और अपने साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।"

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

बायोडिजाइन बूटकैंप

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर ने अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स जोधपुर) के सहयोग से चिकित्सा प्रौद्योगिकियों में एक शैक्षणिक और प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया है। कार्यक्रम की शुरुआत जुलाई 2020 में बायोडिज़ाइन के मूल विचारों को केंद्र में रखकर की गई थी । इसी सहयोग के विस्तार हेतु संस्थान परिसर में स्टैनफोर्ड बायर्स सेंटर फॉर बायोडिज़ाइन, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) जोधपुर और जोधपुर सिटी नॉलेज इनोवेशन फाउंडेशन (JCKIF) द्वारा संयुक्त रूप से एक बायोडिज़ाइन बूटकैंप का आयोजन किया गया।

बायोडिजाइन बूटकेंप कार्यक्रम की झलकियां

इस कार्यक्रम में डॉक्टरों, इंजीनियरों, संकाय सदस्यों, उद्यमियों इत्यादि द्वारा सह-मार्गदर्शन दिया गया। इसका उद्देश्य एक ऐसे पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करना था जो स्वास्थ्य देखभाल में बहु-विषयक गहन-तकनीकी उद्यमशीलता को बढ़ावा देगा। बूटकैंप में डॉ. अनुराग मायराल (मेडिसिन के प्रोफ़ेसर और स्टैनफोर्ड बायर्स सेंटर फॉर बायोडिजाइन, स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी में ग्लोबल आउटरीच प्रोग्राम के निदेशक) और डॉ. आयशा चौधुरी, (सलाहकार, स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी, स्टैनफोर्ड बायर्स सेंटर फॉर बायोडिजाइन, भारत कार्यक्रम) जैसे विषय विशेषज्ञ वक्ताओं को आमंत्रित किया गया जिन्होने संकाय सदस्यों और छात्रों को बायोडिज़ाइन की प्रक्रिया से परिचित कराया।

इस बूट कैंप ने चिकित्सकों और इंजीनियरों के लिए चिकित्सा आवश्यकताओं को मान्य करने, उन्हें संबोधित करने के लिए नए स्वास्थ्य प्रौद्योगिकी उत्पादों का आविष्कार करने और रोगी की देखभाल में उनके क्रियान्वयन की योजना बनाने के लिए एक साझा मंच प्रदान किया। बूट कैम्प में टीम गतिविधि पर व्यावहारिक कार्य शामिल थे:

- क्लिनिकल आवश्यकता विवरणों से लेकर सफल स्टार्ट-अप तक - क्लिनिकल गैप और बाजार व्यवहार्यता के आधार पर आवश्यकता विवरणों का मसौदा तैयार करना और अंतिम रूप देना।
- बायोडिज़ाइन के माध्यम से संकाय और छात्र संयुक्त स्टार्ट-अप की सर्वोत्तम प्रथाओं पर एक चर्चा।
- भा.प्रौ.सं. जोधपुर और अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स जोधपुर) के स्नातक छात्रों के लिए बायोडिज़ाइन पर एक विचार-मंथन सत्र।

डॉ. अनुराग मैराल ने कहा, "मैं भा.प्रौ.सं. जोधपुर में प्रशिक्षण की अंतःविषय प्रकृति से प्रभावित हुआ हूँ। भा.प्रौ.सं. जोधपुर और अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स जोधपुर) के संकाय प्रतिभागी बायोडिज़ाइन प्रक्रिया सीखने और मेडटेक में संयुक्त कार्यक्रमों के हिस्से के रूप में एक साथ काम करने को लेकर उत्साहित हैं। स्थानीय आवश्यकताओं के लिए प्रारंभ की जाने वाली परियोजनाओं को देखना रोमांचक हैं जो अंततः वैश्विक समाधान प्रदान कर सकती हैं। उन्होंने आगे कहा, "भारत इस संयुक्त कार्यक्रम से नवीन चिकित्सा प्रौद्योगिकियों और भविष्य के मेडटेक उद्यमियों को उभरता हुआ देखेगा।"

प्रोफ़ेसर शांतनु चौधुरी, निदेशक, भा.प्रौ.सं. जोधपुर ने अपने संबोधन में, बायोडिजाइन प्रक्रिया और उद्यमिता के दर्शन के महत्व पर प्रकाश डाला और यह कैसे भा.प्रौ.सं. जोधपुर और अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स जोधपुर) द्वारा संयुक्त रूप से पेश किए जाने वाले मेडिकल टेक्नोलॉजीज़ शैक्षणिक कार्यक्रमों के भीतर समाहित है, जिससे इसे अद्वितीय और सफल बनाया जा सके।

कार्यालयीन टिप्पणियां

A brief note is placed below - संक्षिप्त नोट नीचे रखा है।

Case may be transferred to the concerned office - मामला संबंधित कार्यालय को भेजा जाए / जा सकता है।

Draft reply is put up for approval - उत्तर का मसौदा अनुमोदन के लिए प्रस्तुत है।

Follow up action should be taken soon - अनुवर्ती कार्रवाई शीघ्र की जाए।

Kindly collect the information from concerned sections - कृपया संबंधित अनुभागों से सूचनाएं एकत्र करें।

Please acknowledge receipt - कृपया पावती भेजें।

Tenders have been invited - निविदाएं आमंत्रित की गई हैं।

With regards - सादर, शुभकामनाओं सहित।

विदाई समारोह

डॉ. आर. चिदंबरम, अध्यक्ष अभिशासक मंडल / भारत सरकार के पूर्व प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार को उनके निरंतर मार्गदर्शन के लिए 22 सितंबर 2023 को विदाई समारोह का आयोजन किया गया। उनके कार्यकाल के दौरान, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर के सर्वांगीण विकास की दिशा में एक अभूतपूर्व वृध्दि हुई जो अमूल्य मार्गदर्शन के कारण संभव हुआ है। वह संस्थान में हम सभी के लिए हमेशा प्रेरणा का स्रोत रहे हैं। यह संस्थान के लिए सम्मान और सौभाग्य की बात है । डॉ. चिदंबरम जैसे विश्व स्तर पर प्रसिद्ध व्यक्तित्व ने अभिशासक मंडल के अध्यक्ष पद के साथ संस्थान का नेतृत्व किया।

अध्यक्ष अभिशासक मंडल के विदाई समारोह कार्यक्रम की झलकियाँ

उप निदेशक प्रोफ़ेसर संपत राज वडेरा वाई-20 वॉक (यूथ 20 वॉक) में स्वास्थ्य चेतना के प्रति छात्रों को प्रेरित करने के लिए साइकिल रैली प्रारंभ करते हुए।

संस्थान में 15 अगस्त 2023 के दिन स्वराज्य के प्रणेता लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के जीवन पर आधारित - नाट्य मंचन की कुछ झलकियां

निदेशक, उपनिदेशक एवं अन्य अधिकारी स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर वृक्षारोपण कार्यक्रम में भाग लेते हुए।

निदेशक महोदय स्वतंत्रता दिवस समारोह में भाग लेते हुए।

निदेशक महोदय आकाश बिल्डिंग, खेल परिसर पर ध्वाजारोहण करते हुए

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर सांस्कृतिक संध्या में संबोधित करते निदेशक एवं उप निदेशक महोदय

स्वतंत्रता दिवस के सांस्कृतिक कार्यक्रम की झलकियाँ

स्वतंत्रता दिवस के सांस्कृतिक कार्यक्रम में अपनी प्रस्तुतियां देते परिसर के निवासी

इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) एवं अनुप्रयोग कार्यशाला

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर में 19-20 अगस्त 2023 को पहली इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) एंड एप्लिकेशन पर दो दिवसीय कार्यशाला (IoTA 2023) का आयोजन किया गया। कार्यशाला में शिक्षा जगत, उद्योग और अनुसंधान एवं विकास संगठनों के प्रख्यात वक्ताओं द्वारा IoT अनुप्रयोगों पर ध्यान केंद्रित करते हुए चर्चा की गई।

कार्यशाला आयोजन समिति के सदस्यों का समूह फोटो

कार्यशाला में उपस्थित छात्रों, प्रशिक्षुओं और शोधार्थियों को ज्ञान के अद्वितीय दृष्टिकोण को समझने और सम्मानित वक्ताओं से सीखने का मौका मिला। वक्ताओं में डॉ. विजय कोवली, आईआईएससी बैंगलोर; डॉ. पुनित राठौड़, आईआईएससी बैंगलोर; डॉ. मनोज कुमार, एसटी-माइक्रोइलेक्ट्रॉनिक्स, नोएडा; प्रोफ़ेसर माइकल शेफेना, एनटीएनयू नॉर्वे; प्रोफ़ेसर सुदीप मिश्रा, भा.प्रौ.सं. खड़गपुर; प्रोफ़ेसर अजय अग्रवाल, भा.प्रौ.सं. जोधपुर और डॉ. संजय सिंह, सीएसआईआर-सीरी उपस्थित रहे।

इंटरनेट ऑफ थिंग्स एंड एप्लिकेशन वर्कशॉप (IoTA 2023) में विभिन्न विषयों जैसे- औद्योगिक IoT, हेल्थकेयर में IoT, स्मार्ट होम और इंटेलिजेंट ट्रांसपोर्टेशन सिस्टम पर चर्चा की गई। IoTA 2023 के महत्व के बारे में बात करते हुए संस्थान के निदेशक प्रोफ़ेसर शांतनु चौधुरी ने कहा, "IOT की उत्पत्ति के केंद्र में सेंसर नेटवर्क के विकास का महत्वपूर्ण चरण है, जो परिवर्तनकारी प्रौद्योगिकी का मार्ग प्रशस्त करता है। संचार प्रोटोकॉल की स्थापना आईओटी अनुप्रयोगों की आधारशिला रही है, जिससे एज कंप्यूटिंग के अभिसरण की सुविधा मिलती है। 5जी के आगमन के साथ टावर पर उन्नत तकनीक के साथ कई स्रोतों से डेटा का प्रवाह विकसित होगा। IoT में सेंसर एकीकरण शामिल है जो विभिन्न क्षेत्रों में इसके व्यापक अनुप्रयोग इसकी विशाल क्षमता को रेखांकित करते हुए मल्टीमीडिया डेटा ट्रांसमिशन से भी आगे की प्रौद्योगिकी के विकास प्रक्रिया को सक्षम बनाता है।"

एसटी माइक्रोइलेक्ट्रॉनिक्स के डॉ. मनोज ने उल्लेखित किया कि IoT में व्यापक प्रसार वैश्विक स्तर पर बढ़ रही मांग का परिणाम है। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि स्मार्ट होम भविष्य में IoT उपकरणों के सबसे बड़े क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर सकता है। भा.प्रौ.सं. खड़गपुर के प्रोफ़ेसर सुदीप मिश्रा ने उपेक्षित आबादी के मरीजों की सेवा के लिए सॉफ्टवेयर समाधान के साथ कंप्यूटिंग उपकरणों के उपयोग पर प्रकाश डालते हुए हेल्थकेयर में प्रौद्योगिकी संस्थानों की भूमिका का उल्लेख किया।

विषय विशेषज्ञ द्वारा उत्पाद का प्रदर्शन

कार्यशाला में स्मार्ट शहरों के लिए बुद्धिमान परिवहन प्रणालियों (Intelligent transport system) पर काम कर रहे आमंत्रित वक्ता प्रोफ़ेसर विजय कोवली ने कहा कि बुद्धिमान परिवहन प्रणालियाँ स्मार्ट शहरों के कुशल और सतत भविष्य के लिए सफलता के मार्ग प्रशस्त करती हैं और गतिशीलता में प्रौद्योगिकी को सहजता से जोड़ने में सहायक हैं। कार्यशाला ने IoT अनुप्रयोगों की विशाल क्षमता पर प्रकाश डालकर, प्रतिभागियों के बीच अनुसंधान के रास्ते तलाशने और इस गतिशील क्षेत्र के भीतर उत्पाद विकास में संलग्न होकर लक्ष्य को सफलतापूर्वक प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। कार्यशाला ने उभरते शोधकर्ताओं को विचारों के व्यावहारिक आदान-प्रदान की सुविधा का मंच प्रदान किया, जिससे इस क्षेत्र की चुनौतियों, समाधानों और उभरते अनुसंधान अवसरों पर मजबूत चर्चा संभव हो पायी। संस्थान के विद्युत अभियांत्रिकी विभाग के प्रोफ़ेसर अजय अग्रवाल ने अपने निष्कर्ष भाषण में कहा कि प्वाइंट ऑफ केयर एवं प्रारंभिक निदान समाधानों को साकार करने के लिए विभिन्न इंजीनियरिंग विज्ञान, बायोसाइंसेज और चिकित्सा विज्ञान इत्यादि क्षेत्रों की महत्वपूर्ण भूमिका रह सकती है।

विशेषज्ञ वार्ता ने प्रतिभागियों को IoT अनुप्रयोगों में नवीनतम विकास की अद्यतन जानकारी प्रदान की, जिससे उनका ज्ञान और दृष्टिकोण समृद्ध हुआ। परिणामस्वरूप, कार्यशाला ने अनुसंधान के नए क्षेत्रों में अनुसंधान कार्यों को प्रेरित करने, युवा मन की आकांक्षाओं को पोषित करने और IoT अनुप्रयोगों के मनोरम क्षेत्र में सहयोग करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

संस्थान में प्रयोगशाला भ्रमण के दौरान कार्यशाला के प्रतिभागियों की समूह चित्र

हिंदी माह-2023

सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से केंद्र सरकार के कार्यालयों में प्रति वर्ष हिंदी पखवाड़ा अथवा हिंदी माह का आयोजन किया जाता है। संस्थान ने पिछले वर्ष भी हिंदी पखवाड़ा 2022 का सफलतापूर्वक आयोजन किया था। पिछले वर्ष की तरह इस वर्ष भी संस्थान के संकाय सदस्यों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित करने हेतु हिंदी पखवाड़ा के स्थान पर हिंदी माह-2023 का आयोजन किया गया जिसमें राजभाषा संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

निदेशक महोदय की अध्यक्षता में हिंदी माह 2023 का शुभारंभ 01 सितंबर 2023 को किया गया जिसमें संस्थान में आयोजित की जाने वाली तकनीकी हिंदी संगोष्ठी के पोस्टर का विमोचन भी किया गया। हिंदी माह में आशु भाषण प्रतियोगिता, निबंध लेखन, चित्र देखो कहानी लिखो, हिंदी शब्द ज्ञान प्रतियोगिता, हास्य/व्यंग्य/कविता तथा हिंदी टंकण प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया गया। साथ ही, प्रशासनिक कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग हेतु सितंबर माह के अंतर्गत हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने वाले कार्मिकों के लिए भी प्रोत्साहन प्रतियोगिता रखी गई।

संस्थान के कार्मिकों ने इन प्रतियोगिताओं को सफल बनाने में अपनी अग्रणी प्रतिभागिता की भावना से भाग लिया। समापन समारोह के दौरान निदेशक महोदय द्वारा पुरस्कार प्रदान किये गए एवं कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए हिन्दी प्रकोष्ट के प्रयासों की सराहना की। हिन्दी माह के दौरान निम्नलिखित कार्यक्रमों का आयोजन किया गया था:

प्रतियोगिता का नाम	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	प्रोत्साहन - 1	प्रोत्साहन - 2
	डॉ. / श्री / श्रीमती / सुश्री				
आशु भाषण प्रतियोगिता	मालती टी.	गणेश कुमावत	धीरज सिंह खंगारोत	सायंतनी दत्ता	अमितेश कुमार शर्मा
निबंध लेखन प्रतियोगिता	तरुण भाटी	मनीषा भाटी	योगेश भाटी	हनुमान सिंह	पूनम
चित्र देखो कहानी लिखो प्रतियोगिता परिणाम	तन्वी शर्मा	मालती टी	शिल्पा डांडवानी	मृदुल बोहरा	प्रकाश परिहार
हिंदी शब्द ज्ञान प्रतियोगिता ('क' क्षेत्र कार्मिक)	अजय गर्ग	धीरज सिंह खंगारोत	सुदर्शन	अर्यमा सिंह	कंचन मिश्रा हिमांशु सिंधी
हिंदी शब्द ज्ञान प्रतियोगिता ('ख' और 'ग' क्षेत्र कार्मिक)	प्रीतिंदर कौर	संगीता साहनी	आई. वैशाली	टी. माधवी लता	-
हिन्दी टंकण प्रतियोगिता	रॉबिन सिंह कैन्तुरा	अर्जुन सिंह	नरेश चौहान	अर्यमा सिंह	सुनील टाक
हास्य / व्यंग्य / कविता	दिप्ती कुमारी	नरेश चौहान	डॉ. अनन्त प्रकाश पाण्डेय	सायंतनी दत्ता	प्रीतिंदर कौर
हिंदी माह के दौरान हिंदी कार्य	अर्जुन सिंह	शरद श्रीवास्तव	ईश्वर सिंह	धीरज सिंह खंगारोत	तिलोत्तमा सिंह

हिंदी माह 2023 उद्घाटन समारोह में तकनीकी हिंदी संगोष्ठी का पोस्टर विमोचन करते निदेशक, उप निदेशक एवं अन्य अधिकारी

संस्थान में 24 अगस्त 2023 को आयोजित टर्म इंश्योरेंस पर कार्यशाला की झलकियाँ

भारतीय अंगदान दिवस

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर परिसर में 3 अगस्त 2023 को रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया तथा भारतीय अंग दान दिवस मनाया गया। रक्तदान शिविर में संस्थान के 96 दानदाताओं ने एक नेक मानवीय कार्य के लिए रक्तदान किया। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर में सेवारत समर्पित चिकित्सा पेशेवरों की टीम ने नियमित अंतराल पर रक्तदान किये जाने के बारे में बहुमूल्य मार्गदर्शन किया और रक्तदान से संबंधित भ्रांतियों को दूर करने का प्रयास किया।

अंगदान के महत्व पर चर्चा करते आमंत्रित विशेषज्ञ

कार्यक्रम में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (AIIMS) जोधपुर से आमंत्रित वक्ताओं द्वारा अंग दान पर महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई। सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स जोधपुर) के डीन-अकादमिक, डॉ. कुलदीप उपस्थित थे। उन्होंने अंग दान की प्रक्रिया और चिकित्सा परिदृश्य पर इसके प्रभाव के बारे में जागरूकता प्रदान की।भा. प्रौ. सं. जोधपुर की चिकित्सा अधिकारी डॉ. नेहा शर्मा ने रक्तदान के बारे में जागरूकता और महत्व के बारे में अपने विचार रखे।

अंगदान दिवस पर विशेषज्ञ, छात्र, संकाय सदस्य एवं स्टाफ का समूह चित्र

शिक्षक दिवस कार्यक्रम की झलकियाँ

राष्ट्रीय एमएसएमई (MSME) सम्मेलन

भारत सरकार के सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (MSME) मंत्रालय के साथ-साथ अन्य विभिन्न भागीदारों के साथ राष्ट्रीय एमएसएमई सम्मेलन-2023 और विक्रेता विकास कार्यक्रम (वीडीपी) का आयोजन किया। जो एमएसएमई विकास एवं सुविधा कार्यालय (डीएफओ) जयपुर और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर द्वारा संयुक्त रूप से 21-22 सितंबर 2023 के दौरान आयोजित किया गया। इसका उद्देश्य व्यवसाय जगत तथा सरकारी संगठनों के लिए एक साझा मंच प्रदान करना था। जिसमें सरकारी संगठन द्वारा खरीदार संगठनों की उभरती मांगों की पहचान करने के उद्देश्य से वार्तालाप किया गया। साथ ही छोटे पैमाने के उद्यमियों के अभिनव उत्पादों और उनके औद्योगिक उद्यमों/स्टार्ट-अप की क्षमताओं को प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान किया गया।

इस कार्यक्रम की उपयोगिता पूरे देश के साथ-साथ पश्चिमी राजस्थान के उद्यमियों के लिए थी। सम्मेलन का लक्ष्य कई उत्पादों का स्वदेशीकरण करना है जो वर्तमान में विभिन्न सार्वजनिक क्षेत्रों जैसे रक्षा, रेलवे, पीएसयू इत्यादि के लिए भारी लागत पर आयात किए जाते हैं। दो दिवसीय कार्यक्रम के दौरान एक प्रौद्योगिकी - ज्ञान साझाकरण सत्र और पैनल चर्चा भी हुई, जिसमें विक्रेताओं को पंजीकरण प्रक्रिया, उत्पाद आवश्यकताओं, प्रौद्योगिकियों, निर्यात, जैम (GeM), विपणन आदि के बारे में जानकारी प्रदान की गई।

राष्ट्रीय एमएसएमई सम्मेलन में पैनल चर्चा के दौरान संस्थान के निदेशक एवं अन्य आमंत्रित अतिथि

दो दिनों में अलग-अलग तकनीकी सत्रों में इंजीनियरिंग, मेड-टेक, एसएस स्टील री-रोलिंग और बर्तन, प्रिसिजन मशीन, पैकेजिंग, कृषि-बाजरा-खाद्य-मसाला प्रसंस्करण, ईवी, हरित ऊर्जा, सौर ऊर्जा, खनिज पत्थर घोल (Mineral stone slurry) अनुसंधान और नए उत्पाद विकास से लगभग 350 एमएसएमई , हस्तशिल्प, जीआई, चमड़ा, परिधान, आदि क्षेत्रों की चुनौतियों, विकास की संभावनाओं और उद्यम के अवसरों पर चर्चा की गई।

सम्मेलन के दौरान प्रदर्शनी में विक्रेताओं के साथ बातचीत करते संस्थान के निदेशक और अन्य अधिकारी

इस कार्यक्रम का अध्यक्षीय भाषण भा.प्रौ.सं. जोधपुर के निदेशक प्रोफ़ेसर शांतनु चौधुरी ने दिया। साथ ही अनेक प्रतिष्ठित वक्ताओं ने अपने अनुभव साझा किए जिनमें जोधपुर इंडस्ट्रीज एसोसिएशन (जेआईए) के पूर्व अध्यक्ष डॉ. गौतम कोठारी, एचपीसीएल राजस्थान रिफाइनरी लिमिटेड के कार्यकारी निदेशक श्री जी. यू. नरसिमुलु एवं जोधपुर इंडस्ट्रीज एसोसिएशन (जेआईए) के अध्यक्ष श्री एन. के. जैन सहित अन्य लोग शामिल थे।

राजभाषा नीति के कार्यान्वयन - राजभाषा नियम, 1976 संबंधित निर्देश

मैनुअल, संहिताएं, प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, लेखन सामग्री आदि -

1. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, हिन्दी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में यथास्थिति, मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जाएगा और प्रकाशित किया जाएगा।
2. केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्टरों के प्रारूप और शीर्षक हिन्दी और अंग्रेजी में होंगे।
3. केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग के लिए सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्रशीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदें हिन्दी और अंग्रेजी में लिखी जाएंगी, मुद्रित या उत्कीर्ण होंगी;

अनुपालन का उत्तरदायित्व-

केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह-

1. यह सुनिश्चित करे कि अधिनियम और इन नियमों के उपबंधों और उपनियम (2) के अधीन जारी किए गए निदेशों का समुचित रूप से अनुपालन हो रहा है;और

2. इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच के लिए उपाय करे।

केन्द्रीय सरकार अधिनियम और इन नियमों के उपबन्धों के सम्यक अनुपालन के लिए अपने कर्मचारियों और कार्यालयों को समय-समय पर आवश्यक निर्देश जारी कर सकती है।

विभागीय तकनीकी वार्ताएं एवं चर्चा सत्र

13 जुलाई 2023: भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान खड़गपुर के डॉ. पराग देशपांडे ने केमिकल इंजीनियरिंग विभाग का दौरा किया और "जैविक, बायोमिमेटिक और बायोइंस्पायर्ड सिस्टम की आणविक इंजीनियरिंग" पर व्याख्यान दिया।

21 जुलाई 2023: डॉ. मल्लिकार्जुन राव मोटापोथुला, निदेशक, शक्ति फोटॉन सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड एवं डीएसटी-इंस्पायर फैकल्टी, एसआरएम यूनिवर्सिटी ने भौतिकी विभाग में "परमाणु और आणविक इंटरैक्शन के विज्ञान के अध्ययन के लिए इन-सीटू स्पेक्ट्रोमेट्री" शीर्षक पर एक व्याख्यान दिया।

08 अगस्त 2023: डॉ. निकिता सांगवान ने "सामाजिक नेटवर्क, लिंग मानदंड और श्रम आपूर्ति: नौकरी खोज प्लेटफ़ॉर्म का उपयोग करके प्रायोगिक साक्ष्य" विषय पर व्याख्यान दिया । डॉ. सांगवान जलवायु, खाद्य, ऊर्जा और पर्यावरण के अर्थशास्त्र पर अनुसंधान केंद्र (सीईसीएफईई), भारतीय सांख्यिकी संस्थान नई दिल्ली में अतिथि सहायक प्रोफ़ेसर हैं । इस वार्ता का आयोजन सेंटर फॉर मैथमैटिकल एंड कम्प्यूटेशनल इकोनॉमिक्स, स्कूल ऑफ एआई एंड डेटा साइंस द्वारा किया गया ।

09 अगस्त 2023: डॉ. सुनील मुंदड़ा, जीवविज्ञान विभाग, विज्ञान महाविद्यालय, संयुक्त अरब अमीरात विश्वविद्यालय ने जैव विज्ञान और जैवअभियांत्रिकी विभाग में "मिट्टी और जड़ माइक्रोबियल समुदायों को सुलझाना: प्रमुख अंतर्दृष्टि और नुकसान के साथ एक पर्यावरण अनुक्रमण दृष्टिकोण" विषय पर एक व्याख्यान दिया ।

10 अगस्त 2023: भौतिकी विभाग में प्रोफ़ेसर एस. दत्ता गुप्ता, टीआईएफआर हैदराबाद एवं हैदराबाद विश्वविद्यालय द्वारा “स्पिन-ऑर्बिट फोटोनिक्स” विषय पर चर्चा की गई ।

22 अगस्त 2023: श्री अभिक गिरि ने गणितीय और कम्प्यूटेशनल अर्थशास्त्र केंद्र, एआई और डेटा साइंस स्कूल में "ऑपरेशंस रिसर्च - एक औद्योगिक परिप्रेक्ष्य" पर एक व्याख्यान दिया । श्री गिरि वर्तमान में वेस्टर्न डिजिटल (सैनडिस्क), बैंगलोर में प्रधान संचालन अनुसंधान वैज्ञानिक के रूप में कार्यरत हैं ।

01 सितंबर 2023: डॉ. शिवशंकर सिंह पटेल ने गणितीय और कम्प्यूटेशनल अर्थशास्त्र केंद्र, एआई और डेटा साइंस स्कूल में "मातृ मृत्यु दर को नियंत्रित करने के लिए एक सटीक नीति हस्तक्षेप का सुझाव देने के लिए व्याख्या करने योग्य मशीन लर्निंग मॉडल" पर एक व्याख्यान दिया। डॉ. पटेल निर्णय विज्ञान विभाग में एक संकाय सदस्य के रूप में कार्य करते हैं और भारतीय प्रबंधन संस्थान विशाखापत्तनम में अंतर-अनुशासनात्मक निर्णय विज्ञान और विश्लेषण प्रयोगशाला में अध्यक्ष के पद पर हैं।

02 सितंबर 2023: डॉ. किशोर पोचिराजू ने मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग में "एक नवीन चुंबकीय रूप से युग्मित बॉल ड्राइव के एमएल असिस्टेड डिज़ाइन" पर एक व्याख्यान दिया। डॉ. पोचिराजू स्टीवंस इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, होबोकेन, न्यूयॉर्क, यूएसए में यांत्रिक अभियांत्रिकी के प्रोफ़ेसर हैं।

19 सितंबर 2023: डॉ. अभिजीत सेन गुप्ता ने सेंटर फॉर मैथमैटिकल एंड कम्प्यूटेशनल इकोनॉमिक्स, स्कूल ऑफ एआई एंड डेटा साइंस में "क्या बिजली कटौती से निर्यात प्रदर्शन प्रभावित होता है?: फर्म-स्तरीय सर्वेक्षण से साक्ष्य" विषय पर व्याख्यान दिया। डॉ. गुप्ता एशियन इंफ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट बैंक में वरिष्ठ अर्थशास्त्री हैं ।

20 सितंबर 2023: उल्लेखनीय ग्राफिक उपन्यासकार श्री सारनाथ बनर्जी को स्कूल ऑफ लिबरल आर्ट्स द्वारा "कॉमिक्स और बहिष्करण की भाषा" पर व्याख्यान-सह-चर्चा सत्र के लिए आमंत्रित किया गया ।

आलेख: "चंद्रयान-3 प्रक्षेपण: वैज्ञानिक सीख एवं संभावनाएँ"

23 अगस्त 2023 को सभी भारतीयों की धड़कनें बढ़ी हुई थी। चाहे बच्चा हो या बुजुर्ग, सब की आँखें स्क्रीन पर चंद्रयान-3 के सफल अवतरण को देखने के लिए उत्सुक थीं। शाम को छः बजकर चार मिनट पर जब लैंडर विक्रम ने अपने कदम बहुत ही आराम से चंद्रमा की सबसे असमतल सतह पर रखे तो भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के वैज्ञानिकों और देशवासियों का उत्साह अपने चरम पर था। भारत ने एक बहुत बड़ा लक्ष्य प्राप्त कर लिया था, और वह था चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर चंद्रयान-3 का सफलतापूर्वक कदम रखना। यह एक ऐतिहासिक क्षण था जब भारत उन चार देशों की पंक्ति में खड़ा हो गया जिन्होने चंद्रमा पर पहुंचने की उपलब्धि प्राप्त कर ली थी।

इस अत्यधिक रोमांच का कारण हमारा चंद्रयान-2 का पिछला अनुभव भी था। 22 जुलाई 2019 को सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से चंद्रयान-2 प्रक्षेपित किया गया था और यह यान चंद्रमा की कक्षा में 20 अगस्त 2019 को पहुँच गया लेकिन दुर्भाग्यवश इसका लैंडर 6 सितंबर 2019 को चंद्रमा पर उतरने के प्रयास में कुछ तकनीकी समस्याओं के कारण असफल हो गया, जब वह चन्द्रमा से सिर्फ एक मील दूर था। विवेचनाओं से ये पता चला कि शायद ये कोई "सॉफ़्टवेयर गड़बड़ी" के कारण हुआ था। हम सभी ने उस समय का एक चित्र देखा था जिसमें भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी इसरो के तत्कालीन अध्यक्ष श्री के. सिवन को सांत्वना दे रहे थे। इस चित्र ने देशवासियों की भावना व नम आँखों को बखूबी प्रदर्शित किया था। जैसा कि महान कवि स्वर्गीय श्री मैथिलीशरण गुप्त जी ने अपनी कविता "नर हो न निराश करो मन को" के माध्यम से हमें समझाया था, इसरो के वैज्ञानिकों ने हिम्मत नहीं हारी। उनका अगला लक्ष्य एक "फेलसेफ डिज़ाइन" पर था जिसमें सफल होने की सभी संभावनाएँ थीं, पर असफल होने की संभावना शून्य के बराबर थी। यह कहना जितना सरल है, करना उतना ही कठिन था। हमारे इस सपने को साकार करने के लिए इसरो वैज्ञानिकों की टीम दिन रात परिश्रम में लग गई। इसरो ने चंद्रयान-3 को 14 जुलाई 2023 को सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र श्रीहरिकोटा से प्रक्षेपित किया जिसने 41 दिनों की यात्रा करने के बाद अपना लक्ष्य प्राप्त करके सभी देशवासियों को गौरवान्वित किया। यह सफलता सिर्फ एक उपलब्धि ही नहीं है बल्कि यह हमें अपनी असफलताओं से सीखने और बेहतर करने की सीख प्रदान करती है। जो यह भी बताती है की देशहित के बड़े लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए वर्षों का सामूहिक प्रयास आवश्यक है। ऐसी ऐतिहासिक उपलब्धियाँ कुछ दिनों में प्राप्त नहीं होती, बल्कि इसके पीछे अनेक वैज्ञानिकों के वर्षों का अथक व सतत परिश्रम होता है।

ऐतिहासिक रूप से यदि देखें तो वास्तव में बहुत सारे वैज्ञानिक आविष्कारों की जड़ में वैश्विक ताकतों के बीच का शीत युद्ध और प्रतिस्पर्धा थे। यह समय द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद का था, जब विज्ञान वरदान या अभिशाप दोनों बनने के लिए तैयार था। हालाँकि विश्व के सभी देश व मनुष्य विनाश के बाद शांति के पथ पर अग्रसर होना चाहते थे। देश के दो महान वैज्ञानिकों स्वर्गीय श्री होमी जहांगीर भाभा और स्वर्गीय श्री विक्रम साराभाई ने अंतरिक्ष अनुसंधान की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास शुरू कर दिया था। श्री होमी भाभा ने 1945 में टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च की स्थापना की थी, जबकि श्री विक्रम साराभाई ने 1947 में भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला की स्थापना की। ये दोनो ही संस्थाएं भारत की प्रगति के लिए मील के पत्थर साबित हो रही हैं। 1950 में देश के परमाणु ऊर्जा विभाग की स्थापना हुई जिसके सचिव श्री होमी भाभा थे। इस संस्था ने अंतरिक्ष अनुसंधान के लिए देश में विशेष रूप से अनुदान देना शुरू किया।

1957 में वैश्विक महाशक्तियों में अंतरिक्ष अनुसंधान की प्रतिस्पर्धा चरम पर पहुंच गई जब सोवियत रूस ने स्पुतनिक-1 का प्रक्षेपण किया। तब भारतवर्ष की आजादी को अभी 10 वर्ष ही हुए थे। लगभग 5 वर्ष बाद 1962 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने श्री डॉ. विक्रम साराभाई की सलाह पर भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष अनुसंधान समिति की स्थापना की, जिससे वर्ष 1969 में इसरो की शुरूआत हुई। 1972 में देश के अंतरिक्ष विभाग की स्थापना हुई और भारत अपने अंतरिक्ष उद्देश्यों को लेकर सुनियोजित प्रयास करने लगा। भारत ने अपने पहले स्वनिर्मित उपग्रह आर्यभट्ट को सोवियत संघ के रॉकेट से 19 अप्रैल 1975 को प्रक्षेपित किया। यह सोवियत संघ की सहायता से संभव हुआ क्योंकि भारतवर्ष सोवियत "इंटरकोसमोस प्रोग्राम" का भाग था जो उसके मित्र देशों के अंतरिक्ष अनुसंधान में सहयोग के लिए बनाया गया था। इसरो को उपग्रह प्रक्षेपण यान को बनाने में लगभग सात वर्षों का समय लगा जो कि 40 किलो के भार को 400 किमी की दूरी की कक्षा में भेज सके। 1980 में रोहिणी-1 का सफल परीक्षण किया गया जिसने सोवियत संघ, अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन, चीन और जापान के बाद भारत को पृथ्वी की कक्षा में उपग्रह पहुंचाने वाला सातवां देश बना दिया, जो उस समय की बहुत बड़ी उपलब्धि थी। 1990 में ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान (पीएसएलवी) के आने के बाद भारत अपने अनेक उपग्रहों को पृथ्वी की निचली कक्षाओं में स्थापित करने में सफल हो गया।

अमेरिका ने 1992 से 1994 के दौरान भारतवर्ष को ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम (जीपीएस) तकनीक में सहयोग करने से मना कर दिया। किसी ने सच कहा है कि "आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है"। इसरो ने सैटेलाइट नेविगेशन सिस्टम विकसित करने की इस चुनौती को हाथों-हाथ लिया और स्वतंत्र क्षेत्रीय नेविगेशन सैटेलाइट सिस्टम (आईआरएनएसएस) की आधारशिला रखी। इक्कीसवीं सदी की शुरुआत में वर्ष 2003 में तत्कालीन प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने भारत के वैज्ञानिकों को चंद्रमा पर भेजने की सलाह दी, जो की नए भारत की आकांक्षाओं का आरंभ था।

चंद्रयान-3 का प्रक्षेपण व चन्द्रमा पर अवतरण (स्त्रोत - इसरो वेबसाइट)

यह वह समय था जब देश ने अपने अंतरिक्ष उद्देश्यों की दिशा में जोर-शोर से प्रयास किये। चंद्रमा पर पानी की खोज के लिए भारत ने 2008 में चंद्रयान-1 भेजा। 2013 में भारत एशिया का वह पहला देश बना जिसने पहले ही प्रयास में अपने अंतरिक्षयान को मंगल ग्रह की कक्षा में भेज दिया था। अंततः हमारे चंद्रयान-3 ने 23 अगस्त 2023 को हमारा तिरंगा चंद्रमा पर लहराया। इस ऐतिहासिक उपलब्धि के लिए हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 23 अगस्त को भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस घोषित किया है।

वास्तव में यह एक नये युग की शुरूआत है। देश की नई पीढ़ी ने इस महत्वपूर्ण कालजयी घटना को घटते हुए देखा है जिससे उनका रूझान व जोश विज्ञान के प्रति अवश्य बढ़ेगा, विशेषकर मौलिक विज्ञान विषयों जैसे कि भौतिक विज्ञान व गणित में। यह सफलता उस नयी पीढ़ी को तैयार करेगी जो देश के विकास से उपजे हुए स्वाभिमान को सर्वोच्च प्राथमिकता देगी। साथ ही साथ, हम सभी शिक्षाविदों व वैज्ञानिकों का दायित्व बनता है कि हम इस नई पीढ़ी को मौलिक व व्यावहारिक शोध के सामंजस्य का महत्व बतायें जो कि किसी भी दुर्लभ लक्ष्य की प्राप्ति हेतु आवश्यक है। साथ ही साथ यह भारतीय प्रतिभा को पहचानने का अवसर है। वह समय दूर नहीं जब भारत विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के अन्य सभी क्षेत्रों में अग्रणी भूमिका निभाएगा। भारतीयों के लिए यह कमर की पेटी बांधने का समय है, और भारतीय वैज्ञानिकों और अभियंताओं के लिए उम्मीदों पर खरे उतरने का समय है।

मैं आशान्वित हूँ कि हम सब भारतीय इस आनंदमयी यात्रा के लिए तैयार हैं !!

लेखक : प्रो. श्रीप्रकाश तिवारी
प्रोफ़ेसर, विद्युत अभियांत्रिकी विभाग
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर

"हिन्दी शब्द सिंधु"

बृहत् शब्दकोश देश की अन्य भाषाओं से हिंदी को समृद्ध करने की दिशा में विकसित किया जा रहा है। इसमें विभिन्न विषयों- जनसंचार, आयुर्वेद, खेलकूद, अंतरिक्ष विज्ञान, भौतिकी, रसायन विज्ञान, जीवविज्ञान, वैमानिकी, कंप्यूटर विज्ञान, इलैक्ट्रॉनिक्स, भू-गर्भशास्त्र, मानविकी आदि से संबंधित शब्दावली के साथ-साथ पारंपरिक शब्दावली को भी समाहित किया जा रहा है। इस शब्दकोश में शब्द की प्रविष्टि के साथ-साथ उसकी व्याकरणिक कोटि, अर्थ, पर्याय, आवश्यकतानुसार प्रयोग, विलोम, मुहावरे एवं तत्संबंधी अन्य आवश्यक जानकारियाँ दी गई है। यह शब्दकोश पूर्णतया डिजिटल तथा खोजपरक (सर्चेबल) है। यह एक ऐसा शब्दकोश होगा जो पूर्णतः अद्यतन और समावेशी होगा तथा इसमें हिंदी में प्रयुक्त होने वाले सभी शब्दों का अर्थ सहित संग्रह होगा। इस शब्दकोश में हिंदी और हिंदी क्षेत्र की बोलियों, उपभाषाओं और भाषाओं के शब्द, अन्य भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्द, मीडिया और न्यू मीडिया के शब्द, तकनीक और विज्ञान के शब्द तथा विधि एवं न्याय के शब्द भी शामिल किए जा रहे हैं। यह पूर्णतया डिजिटल वेब आधारित होगा तथा इसे केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा निर्धारित मानकीकृत वर्तनी के अनुसार तैयार किया जा रहा है। इसमें यूनिकोड फॉन्ट का उपयोग किया जा रहा है तथा इसमें हिंदी, अंग्रेजी में टंकण कर शब्द खोजने की सुविधा होगी।

संघ का राजकीय कार्य हिंदी में करने के लिए वार्षिक कार्यक्रम 2023-24

आलेख: "मेरा भारत - मेरी आजादी"

अभी कुछ दिनों पूर्व ही स्वतंत्रता का महोत्सव मनाया गया। भारत सरकार की हर घर तिरंगा की मुहिम ने जोर पकड़ रखा था। हर संस्थान, हर मोहल्ला, हर चौराहा, हर घर आजादी के रंग से सराबोर दिखाई दे रहा था। कुछ लोग राष्ट्र रंग में एकदम जुटे हुए, जुड़े हुए और डूबे हुए प्रतीत हो रहे थे। "मेरे देश की धरती" या "ये देश है वीर जवानों का" जैसे गानों की धुने चारों ओर गुंजायमान थी। किन्तु इस सबके बीच कुछ लोग वो भी थे जो "इससे क्या होगा", "उससे क्या होगा" के रूप में अपनी ढफली अपना राग गाते दिख रहे थे फिर चाहे कोई सुने अथवा नहीं। कुछ वे भी थे जिनके मन में कुछ कर गुजरने की उमंगे तो उठती हैं किंतु उनको समझ नहीं आता कि करना क्या है।

वास्तव में पर्व कोई भी हो उसके दो स्वरूप होते हैं - एक प्रतीकात्मक और दूसरा सार्थक। प्रतीकात्मक स्वरूप बाहरी बदलाव अर्थात् उल्लास और उत्साह के रूप में, सजावट के रूप में, अच्छे कपड़ों के रूप में, रंग रोगन के रूप में दिखाई देता है तो दूसरी ओर सार्थक स्वरूप आंतरिक बदलाव अर्थात व्यक्ति के व्यवहार एवं उसके संकल्प के रूप में परिलक्षित होता है। जो भी हो, इस वर्ष का स्वतत्रंता का समागम अनूठा था, एक ऐसे मेले की तरह जिसमें सबके लिए कुछ न कुछ था। भारतीयता की यही तो विशेषता है कि हर एक के लिये स्थान है और हर एक का सम्मान है। युवा वर्ग के लिए इस विशेष समय के क्या मायने हैं यह समझने का भी प्रयास किया गया। कई पढ़े-लिखे नौजवान तो अभी तक 'डीपी' और 'फेसबुक की प्रोफाइल' पर तिरंगा लगाते हुए दिखाई दे रहे हैं।

जो कोई किसी संस्था से जुड़ा है उसके लिए संस्था द्वारा आयोजित कार्यक्रम प्राथमिकता रहे। कुछ को इंतजार था उचित समय और उचित विचार का, जब भी दस्तक देगा तो कुछ कदम उठा लेंगे। कुछ ऐसे भीं हैं जिनके लिए इस समय का उतना ही महत्व है जितना किसी के जन्मदिन का होता है। एक वर्ग ऐसा भी है जो इस समय का उपयोग इस महोत्सव की गहराई को जानने में, स्वतंत्रता के वीरों के संघर्ष की कहानी पढ़ने में और उसके अनुसार विमर्श करने में कार्यरत हैं। भारत की आजादी के अनेक ऐतिहासिक कथानक हैं। इसलिए किसी एक व्यक्ति के योगदान को सर्वोपरि रखना शेष के बलिदान का अवमूल्यन होगा। यह सही समय है जब मान्यताओं को जानकारी में बदलें। मान्यताओं के आधार पर जो परिभाषाएं गढ़ी हैं उनमें जानकारी के आधार पर आवश्यकतानुसार परिवर्तन करें।

आजादी लाठी चलाने से मिली है अथवा लाठी खाने से, भूखे रहने से मिली है अथवा भूख के कारण किए गए संघर्ष से, रातें काली होने से मिली है अथवा रातें काली करके, किसी एक वर्ग विशेष के कारण मिली है अथवा सामूहिकता और पारस्परिकता के आधार पर, यही सब जानने का यह सर्वाधिक उचित समय है। अमृत काल में अमृत मंथन भी हो और अमृत चिंतन भी हो। गहराई में जाने पर अपने राष्ट्र एवं राष्ट्रवीरों के प्रति सम्मान से उठा हुआ हाथ वैसे ही लगेगा जैसे हवा में लहराते हुए तिरंगे को सलामी देना। अधिक जानने पर एक सहज भाव अवश्य रहेगा कि स्वतंत्रता के मतवालों के मूल में स्वयं की, समाज की एवं राष्ट्र की प्रसन्नता ही रही होगी। अपने और अपनों के चेहरे पर खुशी देखना ही उनका मुख्य उद्देश्य रहा होगा।

स्वतंत्रता के इस महापर्व पर आजादी के अमृतकाल की शुरूआत के साथ कुछ विद्यार्थी के राष्ट्रवादी विचारधारा की ओर उन्मुख दिखाई दिए। उन्होंने आजादी के इस दिन प्रण लिया -

- व्यसन (नशे) से आजादी का
- 'लोग क्या कहेंगें' इस सोच से आजादी का
- भ्रष्टाचार से आजादी का
- अनावश्यक तनाव के बोझ से आजादी का

कदाचित यही वह युवा सोच है जिसके कारण विश्व गुरू बनने का स्वप्न संजोया जा सकता है, यही वह कारण है जिससे संपूर्ण विश्व एक आशा भरी निगाह से हम हिन्दुस्तानियों की ओर देख रहा है -

मैं ही भूत था, वर्तमान भी और स्वर्णिम भविष्य की पहचान हूँ, अपनी संस्कृति को संजोए वैश्विक विकास की धारा के साथ गतिमान हूँ।
आजादी के नारों और स्वाभिमानी धरती पुत्रों का अभिमान हूँ, हर कोई जिस ओर आशा भरी निगाहों से देख रहा, मैं वही हिंदुस्तान हूँ।

रचियता
डॉ. विवेक विजय
सह आचार्य, गणित विभाग

हार्दिक बधाई

पुणे में 14-15 सितंबर 2023 को आयोजित तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन 2023 में श्री रवींद्र कुमार, निदेशक, डीआरडीओ इंडस्ट्री एकेडमिया उत्कृष्टता केंद्र - भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर (DIA-CoE, IITJ) को उनके सहलेखन में लिखित पुस्तक 'प्राचीन भारत में विज्ञान' के लिए राजभाषा गौरव पुरस्कार – 2022 से पुरस्कृत करते हुए - श्री भर्तृहरि महताब, माननीय उपाध्यक्ष, संसदीय राजभाषा समिति एवं डॉ. भारती पवार, लोकसभा सांसद।

हर घर तिरंगा !!

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान परिसर में 13 से 15 अगस्त तक आवासों एवं कार्यालयों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराकर "हर घर तिरंगा" कार्यक्रम में शामिल होने के लिए आह्वान किया गया। तिरंगा हमारे राष्ट्र का गौरव हैं और यह हमारे लिए देश भक्ति की भावना का प्रतीक हैं । इस स्वतंत्रता दिवस पर हमेने तिरंगे झंडे के नीचे एकरूप होकर विविधत्ताओ से भरे हमारे प्यारे भारत की एकता का जश्न मनाया।

विभाजन विभीषिका स्मरण दिवस

15 अगस्त 1947 को हमारा देश गुलामी की जंजीरों से मुक्त हो गया था लेकिन इस दिन के पहले क्या-क्या घटनाएं घटित हुई और कितने लोगो को इस विभाजन की आग में अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा, इस पर अभी भी इतना नहीं ध्यान दिया गया। हम समय के साथ जुल्म की इस घड़ी को भूला चुके हैं। विभाजन विभीषिका अपने प्रियजनों को खोने के दर्द का अहसास कराने एवं उनको याद करने का दिन हैं। इस स्मरण दिवस पर निदेशक महोदय प्रोफ़ेसर शांतनु चौधुरी एवं अन्य प्रमुख वक्ताओं ने अपने विचार रखे। इस सभा ने विभाजन की दुखद यादों को प्रतिबिंबित करते हुए, खोए हुए जीवन को याद करने के लिए एक मार्मिक मंच के रूप में कार्य किया। इन मार्मिक चर्चाओं के बीच, हम सीमाओं और मतभेदों से परे, समझ और सद्भाव को बढ़ावा देते हुए हम राष्ट्र के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराते हैं। करुणा और एकजुटता से परिपूर्ण भविष्य की दिशा में काम करके अतीत की स्मृति का सम्मान करने का आह्वान किया गया।

इंजीनियर्स दिवस

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर में आईहब -दृष्टि के सहयोग से स्मारक दिवस समिति(सीसीसी) द्वारा इन्जीनियर्स दिवस पर उनके उल्लेखनीय योगदान को याद करते हुए जोधपुर क्लब ऑडिटोरियम में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

ऑनलाइन मशीनिंग घटकों में सतह दोष (Surface defect) का पता लगाने पर एक पैनल चर्चा का आयोजन किया गया था जिसमें श्री नवीन कंसारा , प्रोफ़ेसर कौशल देसाई, श्री नंदन मिश्रा ने भाग लिया और सतह दोष (Surface defect) का पता लगाने पर अपने प्रोजेक्ट की दिशा में अपनी यात्रा के अनुभव सांझा किये। पैनल चर्चा का संचालन श्री मानस बैरागी द्वारा किया गया।

इंजीनियर्स दिवस के अवसर पर पैनल चर्चा करते विषय विशेषज्ञ

एक पूर्णाधिवेशन वार्ता भी आयोजित की गई जिसमें टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज के डॉ. अशोक महाराजा द्वारा इंजीनियरिंग के लिए संवर्धित वास्तविकता (AR) - वर्चुअल रियलिटी (VR) पर एक वार्ता की गई थी, जहां उन्होंने साझा किया कि कैसे संवर्धित वास्तविकता और वर्चुअल रियलिटी ने तृतीयक क्षेत्र के अंतर्गत उद्योगों के एक महत्वपूर्ण हिस्से को अपने नियंत्रण में ले लिया है।

राष्ट्रीय खेल दिवस

रजत ओझा गेमिट्रोनिक्स के मुख्य कार्यकारी अधिकारी ने भारत में डिजिटल गेमिंग के भविष्य के बारे में वार्तालाप की।
राष्ट्रीय खेल दिवस हर साल 29 अगस्त 2023 को हॉकी के दिग्गज खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद के जन्मदिन के अवसर पर मनाया जाता है। "खेल एक समावेशी और फिट समाज के रूप में" भा. प्रौ. सं. जोधपुर में इस थीम पर एक सप्ताह तक चलने वाली गतिविधियों का आयोजन किया गया। इस दौरान विभिन्न खेलों का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के प्रत्येक आयु वर्ग के कार्मिकों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया। इस अवसर पर खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाया गया तथा सभी को खेलों से जुड़ने एवं स्वस्थ दिनचर्या अपनाने के लिए प्रेरित किया गया। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर के खेल परिसर में एक सप्ताह तक चलने वाली शारीरिक गतिविधियों के द्वारा खेल भावना और टीम भावना का प्रदर्शन देखा गया।

क्राउडसोर्स्ड पक्षी डेटा : एक महत्वपूर्ण उपकरण

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर के शोधकर्ताओं द्वारा की गई वर्तमान शोध में क्राउडसोर्स्ड पक्षी डेटा के महत्व पर प्रकाश डाला गया है। जो स्थापित पारिस्थितिक क्षेत्रों को समझने, कृषि-खेत के मानवजनित प्रभावों का आकलन करने और भौगोलिक क्षेत्रों एवं बायोटा* के बीच जटिल संबंधों को प्रकट करने के लिए एक बायोटा-आधारित उपकरण के रूप में है। इस डेटा का उपयोग करके, पक्षी प्रजातियों के वितरण, कृषि प्रभावों और भूगोल एवं जैव विविधता के अंतर्संबंध के बारे में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्राप्त की जा सकती है। शोध में ईबर्ड के ओपन-सोर्स क्राउडसोर्स्ड डेटा का उपयोग किया गया और इस शोध के लिए सहयोगी भागीदार जैव विज्ञान एवं जैव अभियांत्रिकी विभाग, कंप्यूटर विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग और जोधपुर सिटी नॉलेज एंड इनोवेशन क्लस्टर हैं।

थार का मरूस्थल अपनी अद्वितीय जैव विविधता और नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र के लिए जाना जाता है। हालाँकि, विभिन्न मानवजनित गतिविधियों और व्यापक डेटा की कमी के कारण, क्षेत्र की पारिस्थितिक विशेषताओं और इसके विविध जैविक समुदायों के वितरण की सीमित समझ ही उपलब्ध है। पारिस्थितिक मूल्यांकन के पारंपरिक तरीकों के लिए अक्सर महत्वपूर्ण संसाधनों, समय और विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है, जिसके कारण पर्याप्त डेटा एकत्र करना चुनौतीपूर्ण हो जाता है।

इस शोध के अनुपलब्धता बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए कंप्यूटर विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. अंगशुमन पॉल, जैव विज्ञान एवं जैव अभियांत्रिकी विभाग की प्रमुख प्रोफेसर मिताली मुखर्जी और सिटी नॉलेज इनोवेशन फाउंडेशन से जुड़ी पारिस्थितिकीविद् डॉ. मानसी मुखर्जी ने थार रेगिस्तान में चार पारिस्थितिक क्षेत्रों को परिभाषित करने के लिए क्राउडसोर्स्ड पक्षी डेटा को एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में प्रस्तावित किया है।

अनुसंधान के महत्व के बारे में बात करते हुए डॉ. मिताली मुखर्जी ने बताया कि "थार रेगिस्तान नवोन्वेषी 'डिज़ाइन' विकसित करने के लिए एक बड़ी प्राकृतिक प्रयोगशाला प्रदान करता है, जो इसकी घटक प्रजातियों के अनुकूलन, अस्तित्व, अन्य आश्रितताओं और संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण को सुनिश्चित करता है।" थार रेगिस्तान को पहले एक एकल पारिस्थितिक क्षेत्र माना जाता था, लेकिन वर्तमान अध्ययन ने चार अलग-अलग पारिस्थितिक क्षेत्रों की पहचान की: पूर्वी थार, पश्चिमी थार, संक्रमणकालीन क्षेत्र और सांस्कृतिक क्षेत्र।

शोध के परिणाम इस प्रकार हैं:

- खेती योग्य क्षेत्र को तीन अलग-अलग भौगोलिक क्षेत्रों के बीच विभाजित पाया गया, जो मानव गतिविधियों के कारण निवास स्थान के विखंडन का सुझाव देता है और एक इको क्षेत्र के रूप में इसकी विकसित प्रकृति का संकेत देता है।
- संवर्धित क्षेत्र ने सबसे कम विविधता (α विविधता) और प्रजातियों की संरचना (β विविधता) में उच्चतम भिन्नता प्रदर्शित की, जिससे इस क्षेत्र में अपनी अद्वितीय जैव विविधता की रक्षा के लिए बहाली के प्रयासों की आवश्यकता पर बल दिया गया।
- यह अध्ययन स्थापित पारिस्थितिक क्षेत्रों को समझने, कृषि-खेत भूमि के प्रभाव का आकलन करने और एक पारिस्थितिकी तंत्र में भौगोलिक क्षेत्रों और बायोटा के बीच संबंधों की खोज के लिए एक मूल्यवान उपकरण के रूप में क्राउडसोर्स्ड पक्षी डेटा के महत्व पर प्रकाश डालता है।

भविष्य के अध्ययन रेगिस्तानी पारिस्थितिक तंत्र में बायोटा-आधारित स्थिरता आकलन को बढ़ाने के लिए विभिन्न पोषी स्तरों में स्थानिक विविधता में भिन्नता की खोज पर ध्यान केंद्रित करेंगे। इसके अतिरिक्त, पारिस्थितिक क्षेत्रों की छोटी इकाइयों के भीतर भिन्नताओं की जांच करना और स्थिरता और दीर्घकालिक स्थिरता पर उनके प्रभाव की जांच करना व्यापक के लिए महत्वपूर्ण है समझ और संरक्षण योजना है।

(*बायोटा = किसी विशेष स्थान, समय या आवास में रहने वाले जानवर और पौधे)

स्थापना दिवस समारोह पर वार्षिक पुरस्कार वितरण करते मुख्य अतिथि श्री अलकेश कुमार शर्मा

अनुसंधान उत्कृष्टता पुरस्कार - यंग फैकल्टी

डॉ. मनीष नरवरिया, सह आचार्य

डॉ. शहाब अहमद, सह आचार्य

डॉ. अनुज पाल कपूर, सहायक आचार्य

इंटरनेशनल रिसर्च मोबिलिटी ग्रांट (IRMG) पुरस्कार

डॉ. सुखेंदु घोष, सह आचार्य

डॉ. रंजू मोहन, सहायक आचार्य

डॉ. सुमन ढाका, सहायक आचार्य

डॉ. सुचेतना चक्रवर्ती, सह आचार्य

डॉ. मिठू रानी कुइती, सहायक आचार्य

वंदना मेमोरियल पुरस्कार

डॉ. जितेश मोहनोत, सहायक आचार्य

डॉ. साक्षी धानेकर, सह आचार्य

प्रतिभाशाली कर्मचारी पुरस्कार

ग्रुप ए : प्रशांत भारद्वाज, सहायक कुलसचिव

ग्रुप बी: अशोक गहलोत, कनिष्ठ अधीक्षक

ग्रुप सी: श्याम सुंदर सिंह, कनिष्ठ सहायक

जुलाई - सितम्बर तिमाही 2023

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर